

क्या कृषि नीति में बदलाव के बीज बो पाएगा बजट

उम्मीद है कि एक फरवरी को आने वाला बजट इस बार खेती को सिर्फ कल्याणकारी योजना न मानकर, इसे एक उत्पादक और तकनीकी-सक्षम क्षेत्र के रूप में विकसित करेगा।

बजट 2026 भारत की कृषि नीति में बदलाव के बीज बो सकता है। यह ऐसा क्षेत्र है जो भारत-अमेरिका व्यापार वातावरण में एक प्रमुख विवाद बिंदु बनकर उभरा है। खेती के मुद्दे पर ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पलटवार करने का फैसला किया। 7 अगस्त को दिल्ली में ट्रॉप द्वारा टैरिफ की घोषणा के एक दिन बाद, उन्होंने कहा कि भारत अपने किसानों, डेयरी

क्षेत्र और मछुआरों के कल्याण से कमी समझौता नहीं करेगा। अब सबकी निगाहें इस बात पर हैं कि सीतारमण अपने बही-खाते में भारत के अजन्दाताओं के लिए क्या खोलती है। क्या बजट 2026 केवल लेखा-जोखा संतुलित करेगा या घरेलू प्राथमिकताओं और वैश्विक व्यापार दबावों के बीच फंसे इस क्षेत्र के लिए किसी बड़े पुनर्निर्माण का संकेत देगा।



समय की आवश्यकता

2050 तक भारत की जनसंख्या 1.6 अरब तक पहुंचने का अनुमान है। ऐसे में खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही सतत विकास तथा एसडीजी लक्ष्यों के अनुरूप देश की कृषि निर्यात क्षमता को खोलना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। विशेषज्ञ इस चुनौती से निपटने के लिए 4पी दृष्टिकोण की जरूरत बताते हैं।

प्रोड्यूस (उत्पादन): अनुसंधान एवं विकास में निवेश के जरिए अधिक उत्पादन

प्रोसेस (प्रसंस्करण): मूल्य संवर्धन और अवसंरचना के माध्यम से अधिक उत्पादन मूल्य

प्राइस (कीमत): कुशल आपूर्ति शृंखला और बेहतर मूल्य प्राप्ति के जरिए अधिकतम मूल्य

प्रोटेक्ट (संरक्षण): दीर्घकालिक स्थिरता के लिए संसाधनों की लचीली और टिकाऊ सुरक्षा

कृषि क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाएं

2026 में भारत वैश्विक मंच पर दो प्रमुख उपलब्धियों के साथ प्रमुख भूमिका में होगा। संयुक्त राष्ट्र ने 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष घोषित किया है, जो कृषि-खाद्य प्रणालियों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका और कृषि व ग्रामीण आजीविका में लैंगिक अंतर को पाटने की तत्काल आवश्यकता को मान्यता देता है। भारत अपनी अध्यक्षता में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा, जो अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने का अवसर देगा। आगामी केंद्रीय बजट महिला-नेतृत्व वाली कृषि पहलों के लिए संसाधन आवंटित कर व वैश्विक कृषि-खाद्य निर्यात में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को सशक्त बनाएगा।

अधिक धन की संभावना

पिछले केंद्रीय बजट में कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए आवंटित वित्त वर्ष 2025 में 1.52 लाख करोड़ और वित्त वर्ष 2026 में 1.37 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किया गया था, जबकि एमएसपी और इनपुट सब्सिडी सहित क्षेत्र पर वास्तविक प्रभावी व्यय 3.91 लाख करोड़ से अधिक रहा। अनुमान है कि इस क्षेत्र के लिए आवंटन में उत्तर की ओर बढ़त हो सकती है। अधिक आवंटन उभरते क्षेत्रों को प्रोत्साहन देगा और निर्यात लक्ष्यों, आत्मनिर्भरता, अनुसंधान एवं विकास तथा तकनीक-आधारित खेती को समर्थन प्रदान करेगा। यह बजट ऐसे समय में आ रहा है जब कृषि क्षेत्र सुस्ती के दौर से गुजर रहा है।

खाद्य सुरक्षा के लिए कदम

सरकार के राष्ट्रीय खाद्य तेल-तिलहन मिशन और आत्मनिर्भर दाल मिशन, आत्मनिर्भरता की स्पष्ट दिशा दर्शाते हैं। इसमें तिलहन के लिए 2030-31 तक 10,103 करोड़ रुपये का प्रावधान है। उत्पादन को 39 मिलियन टन से बढ़ाकर लगभग 70 मिलियन टन करने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें 40 लाख हेक्टेयर धान-परती भूमि को तिलहन के तहत लाने की योजना शामिल है। इसी प्रकार 1,000 करोड़ के समर्थन वाले दाल मिशन का लक्ष्य 2027 तक चर्चानित दालों में आत्मनिर्भरता हासिल करना है, जिसके तहत 126 लाख क्विंटल प्रमाणित बीजों का वितरण और 88 लाख मुफ्त बीज किट उपलब्ध कराई जाएंगी। बजट में इन प्रयासों को और मजबूत करना चाहिए, खासकर इसलिए क्योंकि भारत अभी भी अपनी खाद्य तेल आवश्यकता का लगभग 60% आयात करता है और दालों का भी बड़ा हिस्सा बाहर से लाता है। खाद्य और पोषण सुरक्षा की शुरुआत खेतों से होती है। भारतीय कृषि में पैमाना भी है और स्थायित्व भी। बजट 2026 यह तय करेगा कि सरकार पुरानी लकीरों पर ही हल चलाती रहेगी या इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर बड़ी फसल काटने में मदद करेगी।

परिवहन में सड़ते अरबों रुपये

मजबूत अनाज उत्पादन के बावजूद भारत में भंडारण और लॉजिस्टिक्स की कमी के कारण फल और सब्जियों जैसी वस्तुओं का 15% से 20% तक नुकसान हो जाता है। पीडीएस भी रिसाव, अवसंरचना की कमी और बर्बादी जैसी चुनौतियों से जूझ रहा है। यह कृषि उत्पादकता के लिए बड़ी बाधाएं हैं। आगामी बजट में फसल कटाई के बाद प्रबंधन हेतु कोल्ड चेन, आधुनिक गोदाम, प्रसंस्करण इकाइयों और डिजिटल आपूर्ति-शृंखला प्रबंधन जैसी कृषि अवसंरचना में निवेश तेज किया जाना चाहिए। मूल्य स्थिरिकरण कोष (पीएसएफ) का विस्तार होना चाहिए। इसका उपयोग पहले से व्याज और दाल की कीमतों को स्थिर करने के लिए किया जा रहा है। अन्य सस्ती आवश्यक वस्तुओं जैसे दाल, आटा और चावल की उपलब्धता नेटवर्क को मजबूत करना, निम्न-आय वर्ग के लिए वहनीयता बनाए रखने में मदद करेगा।



खाद्य सुरक्षा में सेंद्रीय डेस्क

भारतीय कृषि एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ी है। एक ओर देश आत्मविश्वास के साथ स्वयं को वैश्विक खाद्य महाशक्ति, दुनिया के लिए एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता और कृषि विनिर्माण के केंद्र के रूप में स्थापित करने की बात करता है। दूसरी ओर फसल सुरक्षा, किसानों की स्थिरता और खाद्य मूल्य संतुलन की रीढ़ से जुड़ा नीतिगत पारिस्थितिकी तंत्र सक्रिय परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जैसे-जैसे केंद्रीय बजट 2026 नजदीक आ रहा है, यह समय अधिक स्पष्टता, विश्वास और विज्ञान-आधारित निर्णय प्रक्रिया के प्रति नए सिरे से प्रतिबद्धता का अवसर प्रदान करता है। पिछले वर्ष के दौरान फसल सुरक्षा पर सार्वजनिक विमर्श विशेष रूप से सक्रिय रहा है। कीटनाशकों पर अक्सर केवल जोखिम के दृष्टिकोण से चर्चा होती है, जबकि फसल हानि रोकने, किसानों की आय की रक्षा करने और खाद्य गुणवत्ता को नियंत्रित रखने में उनकी भूमिका पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। यह असंतुलन ऐसे समय में सामने आता है जब भारतीय किसान हर वर्ष कीटों, रोगों और खरपतवारों के कारण 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की फसलें खो देते हैं। यह ऐसी हानि है जिसे खाद्य सुरक्षा और निर्यात नेतृत्व की आकांक्षा रखने वाला कोई भी देश अनदेखा नहीं कर सकता।

कीटनाशक देश को खाद्य सुरक्षा देने में भी अहम फसल सुरक्षा के लिए स्पष्ट नियमों की दरकार

सही संतुलन की जरूरत

प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक, 2025 का उद्देश्य भारत की नियामकीय रूपरेखा को आज की वास्तविकताओं के अनुरूप बनाना है। निगरानी को मजबूत करने, अनुपालन में सुधार लाने और किसानों व उपभोक्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने का इरादा समयानुकूल और आवश्यक है। हालांकि, सभी बुनियादी सुधारों की तरह इसका वास्तविक प्रभाव इस बात पर निर्भर करेगा कि इन उद्देश्यों को व्यवहार में कितनी प्रभावी ढंग से लागू किया जाता है। इस दृष्टि से प्रस्तावित कीटनाशक प्रबंधन विधेयक को ऐसे बजट का पूरक समर्थन मिल सकता है, जो नियामकीय क्षमता, आधुनिक परीक्षण अवसंरचना और कुशल मूल्यांकन समारंभों को सुदृढ़ करे। ये कदम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि नई रूपरेखा सुरक्षित कृषि की ओर पुनर्ता का काम करे। इसलिए बजट से फसल सुरक्षा क्षेत्र एक मजबूत आर्थिक वास्तविकता की स्पष्ट स्वीकृति चाहता है। अखिल में उपज की रक्षा करना उतना ही



महत्वपूर्ण है जितना उसका उत्पादन करना। इसलिए फसल सुरक्षा उत्पाद उत्पादकता बनाए रखने में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। उन्हें आवश्यक कृषि इनपुट के रूप में मान्यता देना कृषि लचीलापन और राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में उनके योगदान को बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करेगा।

किसान-केंद्रित सुधार होगा जीएसटी को तर्कसंगत बनाना

बजट की सबसे तात्कालिक अपेक्षाओं में से एक है फसल सुरक्षा उत्पादों पर जीएसटी को अधिकतम 5% तक तर्कसंगत बनाना, ताकि उन्हें अन्य उर्वरकों (बायोस्टिम्यूलेंट/जेविक उत्पादों) के समान स्तर पर लाया जा सके। ऐसा कदम किसानों पर लागत के दबाव को कम करेगा और उच्च गुणवत्ता वाले वैश्व उत्पादों की उपलब्धता बढ़ाकर जिम्मेदार उपयोग को प्रोत्साहित करेगा। इस दृष्टि से यह रियायत से अधिक एक किसान-केंद्रित सुधार है, जो कृषि मूल्य शृंखला में उत्पादकता, सुरक्षा और अनुपालन को मजबूत करता है।

विनिर्माण का अवसर

नए फसल सुरक्षा अणुओं के निर्माण के लिए लक्षित प्रोत्साहन लिंक्ड-इंसेटिव (पीएलआई) ढांचा वैश्विक स्तर के निवेश आकर्षित करने, घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को गहरा करने और भारत को अंतरराष्ट्रीय आपूर्ति शृंखलाओं में अधिक मजबूती से एकीकृत करने में मदद कर सकता है। यह केवल आयात प्रतिस्थापन का मामला नहीं, बल्कि वैश्विक बाजारों के लिए भारत को एक विश्वसनीय और प्रतिस्पर्धी उत्पादक के रूप में स्थापित करने का अवसर है।

नवाचार को वित्तीय समर्थन

फसल सुरक्षा नवाचार विज्ञान-प्रधान, पूंजी-आधारित और रचनात्मक रूप से दीर्घकालिक प्रक्रिया है। एक नए अणु के विकास में एक दशक से अधिक समय लग सकता है, जिसके लिए सतत निवेश और नियामकीय निश्चिन्ता आवश्यक है। यद्यपि भारत में विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को मान्यता देने में प्रगति की है, फिर भी कृषि अनुसंधान एवं विकास के लिए वित्तीय समर्थन को और मजबूत करने की गुंजाइश है। भारत फसल सुरक्षा को किसान लचीलापन, निर्यात वृद्धि और खाद्य सुरक्षा के लिए एक रणनीतिक साधन के रूप में सुदृढ़ कर सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वित्तीय और नियामकीय ढांचे राष्ट्रीय महत्वाकांक्षी के अनुरूप आगे बढ़ें। लिया गया निर्णय न केवल उद्योग के परिणामों को प्रभावित करेगा, बल्कि भारत की कृषि अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक स्थिरता और प्रतिस्पर्धात्मकता को भी आकार देगा।



इंश्योरेंस सेक्टर को भी चाहिए बड़ी राहत

बीमा में सेंद्रीय डेस्क

इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। इंडिया मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है। इंश्योरेंस सेक्टर को बजट से कई उम्मीदें होती हैं, खासकर टैक्स छूट और पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाओं में वृद्धि की ऐसे में आइए जानते हैं इस बजट में इंश्योरेंस सेक्टर के लिए क्या कुछ खास पेश हो सकता है। एक फरवरी को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण केंद्रीय बजट 2026 पेश करने वाली हैं। ऐसे में अब देखना यह है कि बजट 2026 में वित्त मंत्री क्या क्या ऐलान करती हैं और इन ऐलानों से आम लोगों और अलग अलग सेक्टरों को क्या क्या लाभ मिलता है। बात करें इंश्योरेंस सेक्टर की तो इंश्योरेंस सेक्टर को बजट 2026 से काफी उम्मीदें हैं। बदती मेडिकल लागत, कम इंश्योरेंस कवरेज और महंगे प्रीमियम को देखते हुए इस सेक्टर को बजट से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद भी की जा रही है।

सेवशन 80डी की टैक्स सीमा

इलाज और मेडिकल खर्च लगातार तेजी से बढ़ रहे हैं। बावजूद इसके इनकम टैक्स एक्ट की धारा 80डी के तहत हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर मिलने वाली 25,000 रुपये की टैक्स कटौती सीमा कई सालों से बिना बदलाव के बनी हुई है। ऐसे में इस समय में यह सीमा आम लोगों की पर्याप्त राहत नहीं देती है। ऐसे में अब उम्मीद है कि सरकार इस बजट में इस सीमा को 25,000 रुपये से बढ़ाकर 50,000 रुपये कर सकती है।

टर्म इंश्योरेंस पर फोकस

भारत में आज भी बड़ी संख्या में लोगों के पास पर्याप्त लाइफ इंश्योरेंस सुरक्षा कवर नहीं है। रिपोर्ट्स के अनुसार, देश में करीब 17 ट्रिलियन डॉलर का मॉर्बिडिटी प्रोटेक्शन गैप मौजूद है यानी लोगों को जितनी जीवन बीमा सुरक्षा की जरूरत है, उसके मुकाबले लगभग 83 प्रतिशत जरूरतें अब भी पूरी नहीं हो पाई हैं। ऐसे में सरकार को टर्म इंश्योरेंस को प्रोत्साहन देना चाहिए। इसके लिए हेल्थ इंश्योरेंस पर टैक्स छूट, टर्म इंश्योरेंस प्रीमियम पर अलग टैक्स छूट मिलनी चाहिए।

जीएसटी और इंश्योरेंस प्रीमियम

इंश्योरेंस सेक्टर लंबे समय से जीएसटी से जुड़ी राहत की मांग कर रहा है। बीमा कंपनियां केवल जीएसटी से छूट नहीं, बल्कि पूरे सेक्टर को जीरो-रेट डर्जा दिए जाने की मांग कर रही हैं। अगर इंश्योरेंस को जीरो-रेट डेखा जाता है, तो कंपनियां अपने रोजमर्रा के खर्चों पर चुकाए गए टैक्स का इनपुट टैक्स क्रेडिट ले सकेंगी। इससे यह अतिरिक्त टैक्स बोझ प्रीमियम में नहीं जोड़ा जाएगा और ग्राहकों को कम प्रीमियम देना पड़ेगा।

यह भी चाहिए

- ▶ **टैक्स छूट:** इंश्योरेंस पॉलिसियों पर टैक्स छूट की सीमा बढ़ाने की मांग।
- ▶ **पॉलिसीधारकों के लिए सुविधाएं:** पॉलिसीधारकों के लिए वेलम सेटलमेंट प्रक्रिया को सरल बनाने और अधिक सुविधाएं प्रदान करने की उम्मीद।
- ▶ **इंश्योरेंस पेनेट्रेशन बढ़ाना:** इंश्योरेंस सेवाओं को अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए सरकार से समर्थन की उम्मीद।
- ▶ **नियमों में बदलाव:** इंश्योरेंस सेक्टर की अधिक लेबल प्लेनरों को आकर्षित करने और विकास को बढ़ावा देने के लिए नियमों में बदलाव की उम्मीद।

यह भी जानिये

किस वित्त मंत्री ने पेश किए कितने बजट

भारत में हर साल 1 फरवरी के केंद्रीय बजट पेश किया जाता है। यह बजट भारत के वित्त मंत्री द्वारा पेश किया जाता है। हर साल की तरह इस साल भी केंद्रीय बजट 2026 आने वाली 1 फरवरी को भारत, जो वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किया जाएगा। 1947 में आजादी के बाद से अब तक भारत के कई वित्त मंत्रियों ने संसद में बजट पेश किए हैं। कुछ वित्त मंत्री थोड़े समय के लिए रहे और कम बजट पेश किए। वहीं, कुछ वित्त मंत्री लंबे समय के लिए रहे और उन्होंने कई बजट पेश किए। आज हम आपको इन्हीं के बारे में बताते वाले हैं। हम आपको बताएंगे कि 1947 में आजादी के बाद से भारत के कितने वित्त मंत्रियों ने कितने बजट पेश किए। आइए जानते हैं पूरी जानकारी।

आजादी के बाद पहला बजट

- ▶ आर. के. शनमुखम चेट्टी आजादी के बाद भारत के पहले वित्त मंत्री थे। उन्होंने 26 नवंबर 1947 में स्वतंत्र भारत का पहला बजट पेश किया था। आर. के. शनमुखम चेट्टी एक वकील और इकोनॉमिस्ट भी थे।
- ▶ भारत के सबसे ज्यादा बजट पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने पेश किए हैं। उन्होंने कुल 10 बजट पेश किए हैं। हालांकि, यह 10 बजट उन्होंने लगातार पेश नहीं किए। उन्होंने पहले 1959 से 1964 के बीच 6 बजट पेश किए और 1967 से 1969 के बीच 4 बजट पेश किए।
- ▶ पी चिदंबरम भारत के पूर्व वित्त मंत्री रहे हैं। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान कुल 9 बजट पेश किए। उन्होंने अपना पहला बजट 1996 में पेश किया था। वहीं साल 2004 से 2008 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए, बाद में वह साल 2009 में एक बार फिर वित्त मंत्री बने और उन्होंने साल 2013 से 2014 के बीच बजट पेश किए।
- ▶ पूर्व राष्ट्रपति पणब मुखर्जी ने भी भारत में बजट पेश किए हैं। उन्होंने पहले वित्त मंत्री के रूप में भी कार्यकाल संभाला था। इस दौरान उन्होंने कुल 8 बजट पेश किए थे। उन्होंने पहले 3 बजट साल 1982 से 1984 के बीच पेश किए। वहीं साल 2009 से 2011 के बीच उन्होंने 5 बजट पेश किए।
- ▶ निर्मला सीतारमण भारत की वर्तमान वित्त मंत्री हैं और वह साल 2019 से इस पद पर हैं। अब तक वहां 8 बजट पेश कर चुकी हैं और आने वाली 1 फरवरी को वह 9वां बजट पेश करने वाली हैं।

बजट से कंपनियों को बड़ी उम्मीद, अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने का खाका तैयार

बजट में इन सेक्टर पर फोकस बढ़ेगा तो बदलेगी ग्रोथ की तस्वीर लॉजिस्टिक कॉस्ट घटेगी, निवेश बढ़ेगा और रोजगार पैदा होंगे

इन्फ्रा

इंफ्रास्ट्रक्चर, मैनुफैक्चरिंग, ग्रीन एनर्जी और एमएसएमई पर भी ध्यान दे केंद्र सरकार

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को आम बजट पेश करेंगी। इस बजट से भारतीय कंपनियों को कई बड़ी उम्मीदें हैं। उद्योगों से जुड़े विशेषज्ञों का कहना है कि केंद्र सरकार को इस बार बजट में इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने, मैनुफैक्चरिंग में वैल्यू एडिशन बढ़ाने, ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने और एमएसएमई सेक्टर को सस्ता और आसान कर्ज दिलाने पर खास फोकस करना चाहिए, ताकि लॉजिस्टिक कॉस्ट घटे और बिजनेस की रफ्तार बनी रहे। इंडस्ट्री के एक्सपर्ट्स का कहना है कि मौजूदा वैश्विक हालात में ग्रोथ बनाए रखने के लिए शॉर्ट टर्म राहत से ज्यादा जरूरी है कि अर्थव्यवस्था की बुनियाद को मजबूत किया जाए। कंपनियों का भरोसा बढ़ेगा व लंबे समय में देश की प्रतिस्पर्धा क्षमता भी बेहतर होगी।

ग्लोबल तनाव बढ़ा रहे चुनौतियां

अमेरिका के बढ़ते टैरिफ, लगातार चल रहे जियो-पॉलिटिक्स तनाव और स्प्लॉइ चैन में बदलावों की वजह से कंपनियों के लिए अब लागत को काबू में रखना, नीति की स्थिरता और प्रोजेक्ट्स को समय पर पूरा करना बहुत अहम हो गया है। यही वजह है कि निवेश और व्यापार से जुड़े फैसले पहले से ज्यादा सोच-समझकर लिए जा रहे हैं।



भारत की स्थिति बेहतर

नुनिया भर में कंपनियों को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था पहले की तुलना में मजबूत स्थिति में है। इसकी वजह सरकार का पब्लिक इन्वेस्टमेंट पर लगातार फोकस, टैक्स सुधार और कंपनियों की बेहतर बैलेंस शीट है। अब चुनौती यह है कि इस मजबूती को लंबे समय तक टिकाऊ ग्रोथ में बदला जाए और मैनुफैक्चरिंग व एक्सपोर्ट को और मजबूत किया जाए।

कम हुई लॉजिस्टिक कॉस्ट

पिछले एक दशक में सरकार ने सड़क, रेलवे और एयरपोर्ट पर लगातार निवेश बढ़ाया है, जिससे कनेक्टिविटी बेहतर हुई है। वित्तवर्ष 18 से वित्तवर्ष 26 के बीच इंफ्रास्ट्रक्चर पर बजट सपोर्ट करीब 12% सीएजीआर से बढ़ा है। इसका असर यह हुआ है कि देश की लॉजिस्टिक कॉस्ट घटकर अब करीब 7.97% रह गई है। चूंकि रेलवे सामान देने का सबसे सस्ता जरिया है, इसलिए बजट में रेलवे की क्षमता बढ़ाने और प्राइवेट सेक्टर के लिए कारगो सुविधा बढ़ाने पर जोर जारी रहना चाहिए। इसके साथ ही सड़कों पर कैपेक्स बनाए रखते हुए हीओटी मेडल के जरिए निजी निवेश को भी बढ़ावा देना जरूरी है।

मैनुफैक्चरिंग को मजबूत करने की जरूरत

भारत में मैनुफैक्चरिंग का योगदान जीडीपी में अभी करीब 17% है, जबकि सरकार का लक्ष्य इसे 25% तक ले जाना है। पीएलआई रकमी (1.9 लाख करोड़, 14 सेक्टर) से कुछ फायदा जरूर हुआ है, लेकिन अब भी लोकल मैनुफैक्चरिंग, लागत और एगिज्यूशन्स से जुड़ी कई चुनौतियां बनी हुई हैं। इसलिए बजट में रिसर्च डेवलपमेंट, टेक्निकल स्किल और इन्वेस्टमेंट पर टैक्स छूट या इंसेंटिव देने की जरूरत है, खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक्स, ईवी, डेटा सेंटर, एनर्जी स्टोरेज और सोलर जैसे सेक्टरों में।

ग्रीन एनर्जी पर मरोसेमंट पॉलिसी जरूरी

भारत ने 2030 तक जीडीपी की एमिशन इंटेंसिटी 45% घटाने, 500 जीडब्ल्यू नॉन-फॉसिल पावर कैपेसिटी हासिल करने और 2070 तक नेट-जीरो बनने का लक्ष्य रखा है। अब कंपनियों को जरूरत है स्पष्ट पॉलिसी और लॉन्ग टर्म फंडिंग की, ताकि वे मरोसे के साथ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में निवेश कर सकें। बजट से उम्मीद है कि ग्रीन इन्वेस्टमेंट के लिए बेहतर फाइनेंसिंग सिस्टम बने, वलीन एनर्जी वलस्टेर विकसित हो और प्रोजेक्ट्स को तेजी से लागू किया जा सके।

एमएसएमई को सस्ता और आसान लोन मिलना जरूरी

एमएसएमई सेक्टर देश के जीडीपी का करीब 30% और एक्सपोर्ट का 45% योगदान देता है, लेकिन इन्हें अब भी महंगा कर्ज और पेंमेंट डिले जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बजट में ऐसे कदम जरूरी हैं, जिससे एमएसएमई को तेजी से और कम ब्याज पर लोन मिल सके। इसके साथ ही मुद्रा योजना के तहत लोन की सीमा बढ़ाने की जरूरत है, क्योंकि प्रोजेक्ट्स की लागत अब पहले से कहीं ज्यादा हो चुकी है। इन क्षेत्रों को भी चाहिए बजट

फार्मा और मेडटेक को लेकर बड़ी उम्मीद

बजट 2026 में सरकार को फार्मा और मेडिकल डिवाइस सेक्टर में आत्मनिर्भरता पर जोर देना चाहिए। उनका सुझाव है कि मेडिकल डिवाइस सेक्टर के लिए 10,000 करोड़ रुपये का पीएलआई पैकेज दिया जाना चाहिए, जिससे ऑक्सीजन, इमेजिंग और इम्प्लांट जैसे सेगमेंट में घरेलू मैनुफैक्चरिंग बढ़े जीवन क्वालिटी के मुताबिक, अगर यह पीएलआई सपोर्ट मिलता है, तो भारत की मेडिकल डिवाइसेज में 70% तक की आयात निरभरता टाट सकती है और 2030 तक देश में 1.2 लाख करोड़ रुपये का घरेलू उत्पादन खड़ा किया जा सकता है।



खबर संक्षेप

मीटिंग में शिक्षकों को किया जागरूक
बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा कलस्टर के वीर शहीद कपिल देव राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कलस्टर स्तरीय शिक्षकों की बैठक हुई, जिसमें कलस्टर एबीआरसी राजकुमारी के आह्वान पर कलस्टर के सभी विद्यालयों से प्राथमिक व गणित, विज्ञान, संस्कृत टीजीटी शिक्षकों व प्राथमिक शिक्षकों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। प्राचार्य संतोष भाकर ने बताया कि बच्चों के शिक्षा स्तर का ऊँचा उठाने के लिए अलग अलग तरीके अपनाए जायें। उन्होंने सभी विभागीय कार्य पूर्ण करने, खेल खेल में बच्चों को शिक्षा देकर शिक्षा स्तर ऊँचा उठाने, कमजोर विद्यार्थियों को अतिरिक्त समय देने, अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों के परिजनों से संपर्क करने, छात्र संख्या बढ़ाने आने पर चर्चा की।



तालु में लगेगा स्वास्थ्य जांच शिविर, बनाई रूपरेखा बवानीखेड़ा।

गांव तालु में एक फरवरी गौशाला के वार्षिक प्रोग्राम के तहत गांव में भंडारे लगाया जाएगा। गांव के सरपंच के मुताबिक इस दिन 15000 से अधिक श्रद्धालु आएंगे। इसी दिन उपायुक्त साहिल गुप्ता एवं सिविल सर्जन डॉक्टर रघुवीर शांडिल्य के दिशा निर्देश अनुसार एवं सीएचसी धनाना के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी प्रभारी की देखरेख में 1 फरवरी को हेल्थ मेगा कैम्प का आयोजन किया जाएगा। स्वास्थ्य निरीक्षक राजेश सनसनीवाल ने बताया कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र तालु के सभी अधिकारी सभी कर्मचारी रविवार को आदेशों की पालना कर कैम्प में उपस्थित होकर कार्य करेंगे। कैम्प सुबह 9 बजे शुरू होगा। सीएचसी धनाना के वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी प्रभारी के पास आदर्श ग्राम पंचायत तालु ने डिलीवरी टैट चलावने के लिए रेजुलेशन पास करके दे दिया है, जो सिविल सर्जन की सेवा के लिए भेज दिया गया है।

नन्ही वान्या के हाथों से लगवाई त्रिवेणी

भिवानी। संत शिरोमणि गुरु रविदास के जन्मोत्सव की पूर्व संध्या पर शनिवार को ऑफिसर कॉलोनी में कार्यक्रम हुआ। भक्ति और प्रकृति के अद्भुत संगम के बीच यहाँ त्रिवेणी (बरगद, नीम और पीपल) का रोपण किया। पर्यावरण संरक्षण के कार्य के लिए किसी बड़े पद के व्यक्ति के बजाय मात्र डेढ़ वर्ष की नन्ही गुडिया वान्या सिंधु को मुख्यातिथि के रूप में आमंत्रित किया। नन्हे हाथों से पौधों को जीवन देने की इस पहल ने उपस्थित सभी लोगों का दिल जीत लिया। त्रिवेणी रोपण कार्यक्रम का आयोजन त्रिवेणी बाबा के सान्निध्य व पर्यावरण प्रहरी हवलदार लोकराम लोकराम नेहरा के मार्गदर्शन में हुआ। कमलजीत व अन्य कर्मचारियों ने न केवल त्रिवेणी का रोपण किया, बल्कि त्रिवेणी के पूरी तरह से पेड़ बनने तक इसके पालन-पोषण और सुरक्षा की पूर्ण जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली।

मजदूर महिलाओं ने किया प्रदर्शन

■ ढाणा नरसान में पिछले वर्ष जून में मनरेगा काम के बकाया के भुगतान की उठाई मांग

हरिभूमि न्यूज़ ►► भिवानी

माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की भिवानी जिला कमेटी की ओर से ढाणा नरसान गांव में मनरेगा मजदूरों की संत रविदास मंदिर में सभा हुई, जिसमें अधिकतर मनरेगा महिला मजदूरों ने भाग लिया। सभा की अध्यक्षता मनरेगा मजदूर सुलोचना ने की। मजदूरों की सभा को संबोधित करते हुए माकपा के जिला सचिव कामरेड ओमप्रकाश ने कहा कि ढाणा नरसान व धिराना के 40 मजदूरों ने जून-2025 में कितताना रजबाहे की सफाई की थी, उसमें अधिकतर महिलाओं ने काम किया

गांव मिताथल में हवन, भंडारा और मेले का आयोजन श्रद्धालुओं ने बाबा खुबीनाथ और बाबा चमनगिरी को नमन कर मन्नतें मांगी

महिलाओं व बच्चों ने उठारा मेले का लुपत

हरिभूमि न्यूज़ ►► भिवानी

गांव मिताथल के बाबा खुबीनाथ मंदिर में माघ मास की चतुर्दशी पर शनिवार को हर वर्ष की भांति हवन, भण्डारे व मेले का आयोजन किया। मंदिर में सुबह हवन में बाबा खुबीनाथ धाम सेवा समिति के सदस्यों व ग्रामीणों ने आहुति डालकर श्रीश्री 1008 बाबा खुबीनाथ महाराज व महंत बाबा चमनगिरी महाराज से गांव व परिवार की भलाई, सुख समृद्धि के लिए मन्नतें मांगी। हवन में महंत भगवान गिरी महाराज, बाबा जहरगिरी मंदिर के श्रीमहंत डॉ. अशोक गिरी, बाबा केशवानंद गिरी, घनश्याम शास्त्री, सतबीर शास्त्री, बिजेंद्र शास्त्री, पंडित माईराम शास्त्री, पूर्व सरपंच



भिवानी। भंडारे में प्रसाद ग्रहण करते श्रद्धालु व मौजूद साधु संत।

प्रतिनिधि भीष्म सिवाच, पंडित जयभगवान शर्मा, माईराम शर्मा, गोविंद सिवाच, मास्टर तेजराज, पुष्पंत शास्त्री व विकास अत्री आदि ने आहुति डाली। मंदिर के महंत बाबा भगवान गिरी महाराज व श्रीमहंत डॉ. अशोक गिरी महाराज ने श्रीश्री 1008 बाबा खुबीनाथ

महाराज व महंत बाबा चमनगिरी महाराज की प्रतिमा के समक्ष द्वीप प्रज्वलित करके एवं भोग लगाकर भंडारे का शुभारंभ किया। डॉ. अशोक गिरी व महंत भगवान गिरी ने कहा कि बाबा खुबीनाथ महाराज व बाबा चमनगिरी सिद्ध महात्मा थे, श्रद्धालुओं पर उनकी कृपा दृष्टि बनी

रात 12 बजे के बाद से ही श्रद्धालु करने लगे दर्शन

कार्यक्रम के दौरान बाबा के सेवकों व भक्तों ने पूरे गांव में शंखनाद कर तथा घड़ियाल बजाकर धूप की कार लगाई और सुख समृद्धि की कामना की। महंत भगवान गिरी ने बताया कि रात 12 बजे के बाद से ही श्रद्धालु व ग्रामीण बाबा खुबीनाथ महाराज के दर्शन के लिए आने शुरू हो गए थे, वे सिलसिला पूरे दिन चलता रहा।

रहती हैं। भंडारे में हजारों की संख्या श्रद्धालुओं व ग्रामीणों ने प्रसाद में संत महात्माओं, दूरदराज से आए ग्रहण किया।

महिमा का गुणगान

उन्होंने बताया कि जो भक्त सच्चे मन से बाबा को याद करता है, उसकी हर मनोकामना पूर्ण होती है। मेले व भण्डारे में समस्त ग्रामीणों का विशेष योगदान रहा। महिलाओं व बच्चों ने मेले का जमकर लुपत उठारा और स्टॉलों पर खरीददारी की। वहीं मेले में विभिन्न प्रकार के झूले लगाए गए, जिनका बच्चों ने भरपूर आनंद उठाया। मेले के दौरान कलाकारों ने भजनों के माध्यम से बाबा की महिमा का गुणगान किया।

सूर्यनमस्कार कर सीखे योग के गुरु आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में मनाया फन डे

■ शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाता सूर्यनमस्कार: कविता

हरिभूमि न्यूज़ ►► भिवानी

नौरंगाबाद के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में 31 जनवरी को सूर्यनमस्कार कार्यक्रम हुआ। सूर्यनमस्कार का आयोजन में आयुष विभाग और हरियाणा योग आयोग के संयुक्त तत्वाधान में जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉक्टर रश्मि शर्मा, जिला योग कोऑर्डिनेटर डॉ. संजय वैद्य, योग स्पेशलिस्ट डॉ. निशा के मार्गदर्शन में हुआ। आयुष योग सहायक कविता ने पहले सूक्ष्म व्यायाम फिर सूर्य नमस्कार के राउंड करवाए। आयुष योग सहायक कविता ने बताया कि अभियान का मुख्य उद्देश्य अधिक



से अधिक लोगों को सूर्य नमस्कार के अद्भुत गुण से अवगत करवाना है व अधिक से अधिक लोगों में सूर्यनमस्कार व योग के प्रति जागरूकता फैलाना है। वहीं कार्यक्रम में मुख्याध्यापिका सीमा सिंधु, विज्ञान अध्यापिका मंजू आनंद, संस्कृत अध्यापिका नीतू, कायाकल्प योग केंद्र की संचालिका रेनु वर्मा मौजूद रही।

■ डिजिटल दुनिया से दूरी बनाने की के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज़ ►► चरखी दादरी

कस्बा बौदकलां स्थित आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को फन डे का आयोजन किया, जिसमें नर्सरी से कक्षा पांचवीं तक के बच्चों के लिए हंसी, मस्ती, सीख और खेलों से भरपूर रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय निदेशक प्रताप सिंह यादव के प्रेरणादायक भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने बच्चों के साथ समय बिताने व डिजिटल दुनिया से दूरी बनाने की सलाह दी। कार्यक्रम में बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियां



भिवानी। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ को लेकर जागरूकता रैली में शामिल महिलाएं।

बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ पर रैली निकाली बालिकाओं के अस्तित्व की करनी होगी रक्षा

■ गांव ढाणी गुजरानी में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ को लेकर जागरूकता कार्यक्रम

हरिभूमि न्यूज़ ►► भिवानी

डीसी साहिल गुप्ता के मार्गदर्शन में सुपरवाइजर अंजना की अध्यक्षता में गांव ढाणी गुजरानी में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान के अंतर्गत एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में महिलाओं को सरकार द्वारा महिलाओं व छोटे बच्चों के कल्याण के लिए चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी और योजनाओं का लाभ उठाने के

अपील की। कार्यक्रम में सुपरवाइजर अंजना ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज में लिंगानुपात में सुधार लाना, बालिकाओं के अस्तित्व की रक्षा करना तथा उनकी सुरक्षा एवं सम्मान को सुनिश्चित करना है। उन्होंने बताया कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना केवल बेटियों के संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि उनका शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य सभी क्षेत्रों में सशक्तिकरण करना भी इसका प्रमुख लक्ष्य है, ताकि बेटियों समाज की मुख्यधारा में सक्रिय भागीदारी निभा सकें। कार्यक्रम में आंगनवाड़ी वर्कर-हेल्पर सहित स्थानीय महिलाएँ एवं बच्चे उपस्थित रहे।

भगवान राम की महिमा का बखान

■ श्रीखाकी बाबा मंदिर में हुआ अखण्ड रामायण पाठ

हरिभूमि न्यूज़ ►► भिवानी

श्रद्धा और अटूट विश्वास की एक अनूठी मिसाल पेश करते हुए श्रीखाकी बाबा रामचरित मानस मंदिर में अपने अखण्ड रामायण पाठ और कीर्तन के सफल 61 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। मंदिर परिसर में विशेष रामायण पाठ और भव्य कीर्तन का आयोजन किया। मंदिर के महंत राम कृपाल ने बताया कि इस दिव्य अनुष्ठान की शुरुआत आज से ठीक 61 वर्ष पूर्व हुई थी, जिसका शुभारंभ संवत् 2021, माघ शुक्ल त्रयोदशी 14 फरवरी 1965 को महाराजश्री ने किया था। उन्होंने बताया कि मंदिर में भक्ति की धारा दिन-रात बहती है। सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक भक्तों द्वारा 'अखण्ड रामायण' का



भिवानी। अखंड रामायण पाठ में भाग लेते श्रद्धालु।

सुंदर दरबार बना आकर्षण का केंद्र

इस सेवा को साधु-संत और स्थानीय भक्त आपसी तालमेल और सेवा भाव से अनवरत जारी रखते हैं। महंत के अनुसार प्रत्येक वर्ष माघ शुक्ल त्रयोदशी को पाठ की शुरुआत की जाती है और मंदिर पूरी तरह से भगवान राम को समर्पित है, यहां का श्रीराम दरबार और हनुमान जी का सुंदर दरबार श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र है।

सस्वर पाठ किया जाता है। शाम 6 बजे से अगले दिन सुबह 6 बजे तक अखण्ड राम नाम' का संकीर्तन किया जाता है।

11 सदस्यीय कमेटी गठित की शिक्षिका मनीषा की मौत का मामला

■ बैठक में सीबीआई के महीनों जांच के बाद भी खुलासा नहीं करने पर जताई नाराजगी

हरिभूमि न्यूज़ ►► लोहास

बहुचर्चित ढाणी लक्ष्मण गांव के युवती मनीषा के मौत मामले में शनिवार दोपहर बाद गांव में बैठक हुई। पूर्व सरपंच शिंभूराम की अध्यक्षता में बैठक में लोगों ने सीबीआई द्वारा कई महीनों से की जा रही जांच के बाद भी खुलासा नहीं किए जाने पर नाराजगी जाहिर की, जिसको लेकर 11 सदस्यीय कमेटी का गठन किया। नवगठित कमेटी जल्द ही मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से मिलकर मामले की खुलासे की मांग करेगी। बता दें कि गत 11 अगस्त 2025 लापता हुई युवती मनीषा की दो दिन बाद 13 अगस्त को सुबह सिंचानी में नहर किनारे खेतों में शव



लोहास। ढाणी लक्ष्मण गांव में बैठक में मौजूद गणमान्य लोग।

मिला था, जिसके बाद मनीषा मौत मामले में दोषियों की पहचान कर उनकी गिरफ्तारी को लेकर प्रदेशव्यापी आंदोलन चला था। पुलिस पर प्रशासन पर कई आरोप और प्रत्याशों के बाद मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के आदेश पर मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी थी। सीबीआई ने मामले में करीब पांच

बैठक में गहनता से चर्चा की

जानकारी के अनुसार गांव ढाणी लक्ष्मण से गठित 11 सदस्यीय गठित कमेटी में जयसिंह सरपंच, पूर्व सरपंच शिंभूराम, विजेंद्र जांगड़ा, रणवीर स्वामी, पूर्व सरपंच महावीर, अनंतराम पूर्व सरपंच, सतबीर शर्मा, कुलदीप स्वामी, सुरेश ईश्वर, संजय स्वामी व रामकिशन गठित कमेटी में शामिल किए हैं। बैठक में प्रकरण को लेकर गहनता से चर्चा की गई तथा अनेक लोग बैठक में मौजूद रहे।

दो-दो प्रतिनिधि शामिल किए

इसी सिलसिले में शनिवार दोपहर बाद गांवां ढाणी लक्ष्मण में पूर्व सरपंच शिंभूराम की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में मौजूद लोगों के सुझाव के बाद गांवां की 11 सदस्यीय कमेटी का गठन किया। कमेटी में गांव ढाणी लक्ष्मण के 11 सदस्यों के अलावा आसपास के आठ गांवों से भी दो-दो प्रतिनिधि शामिल किए हैं। गठित कमेटी जल्द ही मुख्यमंत्री से मिलकर मामले में खुलासे की मांग करेगी।

महीनों के दौरान अनेक लोगों से पूछताछ और तथ्य जुटाने के बावजूद अब तक मामले का खुलासा नहीं किया, जिसको लेकर परिजनों व आमजन में काफी रोष है।

मनरेगा बचाने के लिए कांग्रेस बेहद गंभीर: सुशील



भिवानी। ढाणा नरसान में मनरेगा को लेकर विरोध जताते ग्रामीण व माकपा के पदाधिकारी।

राज्यों पर डाला भार

उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने जानबूझ कर मनरेगा कानून को बदलकर उसे स्क्रीन में बदल दिया और उसकी 40 प्रतिशत आर्थिक जिम्मेदारी राज्यों पर डाल दी, अब राज्य सरकार की मर्जी पर निर्भर करता है कि वह काम लगाए या नहीं। वर्ष 2005 में यूपीए-1 सरकार में उनकी पार्टी माकपा ने बाहर से समर्थन देकर 100 दिन के काम की कानूनी गारंटी दिलवाई थी, ताकि ग्रामीण मजदूरों को 100 दिन गारंटी काम मिल सके, लेकिन माजपा सरकार ने इस कानून को मजबूत व शहरो में भी लागू करने की बजाय इसे खत्म कर दिया।

था और दिन में तीन बार वीडियोफ़ॉर्म से हाजिरी ली जाती थी, लेकिन आज तक इन मजदूरों को काम का भुगतान नहीं हुआ।

हरिभूमि न्यूज़ ►► चरखी दादरी

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर लघु सचिवालय में 31 जनवरी से 6 फरवरी तक चलने वाले मनरेगा बचाओ संग्राम अभियान के धरने की प्रथम दिन की शुरुआत हुई। धरने की अध्यक्षता जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुशील धानक ने की। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि चरखी दादरी जिले में मनरेगा पूरी तरह से ठप होती जा रही है। सैकड़ों गांवों में मजदूरों को महीनों से काम नहीं मिला, जबकि

सैकड़ों गांवों में मजदूरों को महीनों से काम नहीं मिला, जिन्हें मिला उनकी मजदूरी रुकी



चरखी दादरी। लघु सचिवालय में धरना देते कांग्रेसी।

जिन मजदूरों ने काम किया है उनकी मजदूरी का भुगतान कई-कई महीनों से लंबित है। जाँव कार्ड धारक बेरोजगार घूमने को मजबूर हैं।

सरकार ने जानबूझकर बदला नाम

वक्ताओं ने आरोप लगाया कि माजपा सरकार ने ना केवल जान बूझकर मनरेगा का नाम बदला है बल्कि इसका बजट घटाकर और भुगतान रोककर गरीब, दलित, पिछड़े और ग्रामीण मजदूरों को मुखमरी व पलायन की ओर धकेल दिया है। यह सिर्फ लापरवाही नहीं, बल्कि मजदूरों के संवैधानिक अधिकारों पर सीधा हमला है। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि मनरेगा ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, लेकिन माजपा सरकार की मजदूर-विरोधी नीतियों के कारण गरीबी और बेरोजगारी निरंतर बढ़ रही है। केन्द्र सरकार ने पंचायतों के अधिकार भी सीमित कर दिए हैं। धरने में कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व सीपीएस रणसिंह मान, पूर्व विधायक सोमबीर सांगवान, पूर्व विधायक धर्मापाल सांगवान, पूर्व विधायक सोमबीर सांगवान, राजू मान, डॉ. ओमप्रकाश, जोरवार सांगवान, प्रीतम सांगवान, रणबीर फौजी, सुरेश पांडवनिचा, एडवोकेट आनंद सिंह विजारागिया, एडवोकेट सुनील दुरेजा एडवोकेट, दलीप सिंह सांगवान, संजीव तक्षक, करण सिंह गोठड़ा, नरेंद्र दहिया, नरेश शर्मा, रोहतास खटीक सहित इत्यादि उपस्थित थे।

खबर संक्षेप

प्रदीप बने कांग्रेस की जिला कार्यकारिणी के महासचिव

तोशाम। कांग्रेस द्वारा घोषित जिला कार्यकारिणी में प्रदीप बंसल ईशरवाल को जिला महासचिव नियुक्त किया है। प्रदीप ने जिला महासचिव बनने पर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह, जिलाध्यक्ष अनिरुद्ध चौधरी सहित तमाम पार्टी हाईकमान का आभार जताया। उन्होंने कहा कि पार्टी द्वारा पहले भी उन्हें जो जिम्मेदारी दी गई थी, उन्होंने उसे पूरी लगन के साथ निभाते हुए पार्टी को मजबूत किया और भविष्य में भी वो संगठन की उम्मीदों पर खरा उतरने का प्रयास करेंगे। प्रदीप को नई जिम्मेदारी देने पर कार्यकर्ताओं में खुशी का माहौल है। कांग्रेस हल्का अध्यक्ष मनदीप दुहन, गणेश मितल, सोमबीर चन्नी, राजकुमार धनखड, जगदीश ठेकेदार, सत्यवान हसान, दिलबाग बेडवाल, रोहित, राजेन्द्र रलिया आदि कार्यकर्ताओं ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि प्रदीप बंसल की नियुक्ति से पार्टी को मजबूती मिलेगी।

भैणी ठाकरान में बेटे के जन्म पर कुआं पूजा

भिवानी। भैणी ठाकरान निवासी राकेश के घर में बेटे पैदा होने पर गांव के लोगों को भोजन करवाया और डीजे दोल-नगाड़ों के साथ नाच-गाकर कुआं पूजन किया। राकेश ने कहा कि उसे बहुत खुशी है कि सबसे पहले उनके यहां बेटे ने जन्म लिया है। उन्होंने कहा कि लड़का लड़कों में अब कोई फर्क नहीं है, फर्क केवल सोच का है। आज किसी भी क्षेत्र में लड़कियां लड़कों से पीछे नहीं हैं। वे लड़कों को हर क्षेत्र में चुनौती दे रही हैं।

हॉकी प्रतियोगिता में दूसरे दिन भी खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम तिगड़ाना-ए ने धारणिया फतेहाबाद व अचीना ने खरक को दी पटकनी



भिवानी। हॉकी मैच में खेलते खिलाड़ी व अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट करते आयोजक।



फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

गांव तिगड़ाना में हरियाणा ग्रामीण राज्य स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता अपने पूरे शिखर पर है। प्रतियोगिता के दूसरे दिन शनिवार को मैदान पर न केवल खिलाड़ियों का कोशल देखने को मिला, बल्कि ग्रामीणों का खेल के प्रति अटूट प्रेम भी साफ नजर आया। नॉकआउट आधार पर खेले जा रहे मुकाबलों में हरियाणा के ग्रामीण अंचलों की सर्वश्रेष्ठ टीमें अपनी बादशाहत साबित करने के लिए पसीना बहा रही हैं। प्रतियोगिता के सफल आयोजन में शारीरिक शिक्षक विनोद पिंकू के नेतृत्व में प्रवीण तंवर, प्रदीप सिंदू व दीपू जांगड़ा आदि ने मैदान की व्यवस्था संभाली। वहीं ठाकुर जनकसिंह व राजेश प्रधान की देखरेख वाली कमेटी अनुशासन और मेहमानों के सत्कार का जिम्मा बखूबी निभा रही है। सर्वकल्याण मंच से प्रवीण तंवर, दीपा प्रधान व नरेंद्र शास्त्री ने

शारीरिक विकास के लिए अनुशासन व टीम वर्क की भावना को खेल जरूरी : अतिथि

खेलप्रेमियों का आभार जताया। दूसरे दिन के मैचों का शुभारंभ मुख्यअतिथि मेनपाल शेखावत, सोनूचंद, कंवर सिंह, राजू फौजी, कैप्टन धर्मवीर सिंह, पंकज शेखावत छोट्ट और तिगड़ाना के सरपंच सुरेंद्र दहिया ने किया। अतिथियों ने मैदान पर जाकर खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया और टॉस करवाकर खेल को शुरुआत की। मंच संचालन दीपा तंवर प्रधान ने किया। अतिथियों ने कहा कि खेल ना केवल शारीरिक विकास के लिए जरूरी है, बल्कि ये युवाओं में अनुशासन और टीम वर्क की भावना भी पैदा करते हैं। प्रतियोगिता में प्रथम विजेता को 51 हजार, द्वितीय को 31 हजार, तृतीय को 21 हजार तथा चतुर्थ स्थान पर आने वाली टीम को 11 हजार रुपये व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया जाएगा।

फुटबॉल में लोहारी जाटू ने बलंगा को दी शिकस्त



बवानीखेड़ा। बवानीखेड़ा के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान में संत शिरोमणि गुरु रविदास जयंती पर फुटबॉल प्रतियोगिता हुई। प्रतियोगिता में 40 टीमों ने हिस्सा लिया। प्रतियोगिता का शुभारंभ प्राचार्य संतोष भाकर ने किया। उन्होंने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए बताया कि खेल को हमेशा खेल की भावना से ही खेला चाहिए। हर जीत खेल में होती रहती है। खेलों में अनुशासन की भावना पैदा होती है। फुटबॉल मैच लोहारी जाटू व बलंगा के बीच खेला गया, जिसमें लोहारी जाटू विजेता रही। वहीं भट्ट व मयराड की बीच खेले मैच में मयराड की टीम विजेता रही। धनोबा व बडसी के बीच हुए मुकाबले में धनोबा की टीम विजेती रही। पंजाब के अबोहर व मिडाना के बीच खेले गए मैच में पंजाब अबोहर की टीम ने जीत हासिल की। इस अवसर पर कमेटी सदस्य बिजेन्द्र कुमार, रिकू काजल, अनिल धामिया, अनिल, अजीत सिंह, विमल सिंह, ओमपाल, कर्ण सिंह, डीपीई देवेन्द्र अत्री व गजानंद कोच आदि मौजूद रहे।

बॉक्सिंग में दमखम दिखाएंगे हरियाणा के छोटे



भिवानी। 69वीं राष्ट्रीय स्कूल खेल प्रतियोगिता के लिए हरियाणा की बॉक्सिंग टीम ने अपनी कमर कस ली है। मुक्केबाजी की नर्सरी कहे जाने वाले भिवानी में आयोजित पांच दिवसीय विशेष प्रशिक्षण शिविर के समापन पर खिलाड़ियों का जोश और उत्साह देखते ही बना। इस मौके पर जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. निर्मल दहिया ने खिलाड़ियों को खेल किट वितरित कर उन्हें जीत का आशीर्वाद दिया और रवाना किया। राजकीय मॉडल संस्कृति सौभाग्य सैकेंडरी स्कूल में चले विशेष कैंप में अंडर-19 आयु वर्ग के बालक एवं बालिका खिलाड़ियों ने पसीना बहाया। शिविर सतवान कोच की देखरेख में आयोजित किया गया, जहां खिलाड़ियों की तकनीक और दमखम पर बारीकी से काम किया। हरियाणा की टीम 4 फरवरी से 9 फरवरी तक कर्नाटक के बंगलुरु में होने वाली राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेगी। खिलाड़ियों की रवानगी के समय चौक फिनिशिंग मदन गोपाल और श्रीभगवान एईओ उपस्थित रहे। टीम के साथ कोच वर्षा मलिक (बालिका वर्ग), कोच दीपक (बालक वर्ग), मैनेजर सुधीर मलिक, मनदीप गोयत सहित सुभाष शर्मा, विनोद बाला, काता और उर्मिला जैसे अनुभवी लोग मार्गदर्शन के लिए जा रहे हैं।

बाढ़ड़ा के सरकारी स्कूलों में दिव्यांग एवं जरूरतमंद बच्चों को बांटे स्वेटर

प्रोत्साहन और स्नेह से बढ़ता है बच्चों का आत्मविश्वास : विजय

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बाढ़ड़ा

खंड बाढ़ड़ा के सरकारी स्कूलों में अध्ययनरत दिव्यांग एवं जरूरतमंद बच्चों को स्वेटर वितरण कार्यक्रम आयोजित किया। स्वेटर वितरण संसाधन अध्यापक विजय शर्मा ने सरकारी स्कूल भारीवास, जीतपुरा,काकरोली सरदार, गोपी एवं बाढ़ड़ा सहित विभिन्न विद्यालयों में किया। इस अवसर पर खंड में नियुक्त संसाधन अध्यापक विजय शर्मा ने अपने निजी कोष से लगभग 50



दिव्यांग एवं जरूरतमंद बच्चों को स्वेटर वितरित किए। उन्होंने कहा कि समाज के प्रति हमारा यह मानवीय दायित्व है कि समय-समय पर ऐसे बच्चों को सहयोग देकर मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य किया जाए। जब बच्चों को प्रोत्साहन और स्नेह मिलता है तो वे आत्मविश्वास

किसान शिविर में आधुनिक खेती एवं सहकारिता पर जोर

सहकारिता ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ : प्रविंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ घरखी दादरी

हरियाणा राज्य सहकारी विकास संघ लिमिटेड (हरकॉफेड) पंचकुला द्वारा ग्राम नौरंगाबास जाटान में विशेष किसान प्रशिक्षण शिविर एवं जागरूकता गोष्ठी का आयोजन किया। शिविर का मुख्य उद्देश्य किसानों को सहकारी समितियों के लाभ, आधुनिक कृषि तकनीकों और बागवानी के प्रति जागरूक करना था। शिविर में मुख्यअतिथि के रूप में हरकॉफेड की शिक्षा निदेशिका संतोष सीएम पैक्स चरखी दादरी के

संत रविदास जयंती पर 23 युवाओं ने किया रक्तदान

सहारा चैरिटेबल ट्रस्ट ने लगवाया शिविर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

संत शिरोमणि रविदास महाराज के 649वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में शनिवार को चौधरी बंसीलाल नागरिक अस्पताल में मानवाता की सेवा का एक अनूठा संगम देखने को मिला। वॉशका फाउंडेशन के सहयोग से सहारा चैरिटेबल ट्रस्ट ने 14वें रक्तदान शिविर में युवाओं ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लेकर गुरु के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। शिविर का सफल संचालन शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा और रक्तवीर मनीष वर्मा की देखरेख में संपन्न हुआ। शिविर में डॉ. पल्लवी ने पहली बार रक्तदान किया। शिविर में 23 युवाओं ने इस पुनीत कार्य में अपना योगदान दिया। सहारा चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष जगदीश मिताथल ने रक्तदान के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। शतकवीर राजेश डुडेजा और ब्लड बैंक इंचार्ज डॉ. हर्ष ने रक्तदाताओं को बैज और सर्टिफिकेट देकर



भिवानी। रक्तदान करती रक्तदाता। फोटो : हरिभूमि

दादरी शहर में बनेगा स्मार्ट रोड और बाजार

विधायक सांगवान ने अधिकारियों संग मंथन कर दिए निर्देश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ घरखी दादरी

दादरी शहर में सुविधाओं में इजाफा करने के उद्देश्य से विकसित किए जाने वाले स्मार्ट रोड और स्मार्ट बाजार की योजना को सिरे चढ़ाने के लिए शनिवार को विधायक सुनील सांगवान की अध्यक्षता में कैप कार्यालय में बैठक हुई। बैठक में विभागों के अधिकारियों के अलावा व्यापार मंडल व नगर पार्श्वों की मौजूदगी में परियोजनाओं को धरातल पर लागू



भिवानी। अधिकारियों व व्यापारियों से चर्चा करते विधायक सांगवान।

फुटपाथ बनाए जाएंगे

नप अधिकारियों ने बताया कि इन क्षेत्रों में सड़क के दोनों तरफ युटिलिटी क्षेत्र और फुटपाथ बनाए जाएंगे। बिजली की तारें अंडरग्राउंड की जाएंगी। ट्रांसफार्मरों को हटवाया जाएगा। इसके लिए बिजली निगम के एस्डीओ गौरव को जल्द एस्टीमेट तैयार करने के निर्देश दिए। वहीं जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को भी निर्देश दिए कि वे भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इन क्षेत्रों में सौरचुम्बक व पेयजल लाइनों को शिफ्ट करने आदि से संबंधित एस्टीमेट तैयार किया जाए। विधायक सांगवान ने निर्देश दिए कि अधिकारी आगामी 10 से 20 वर्षों की जरूरतों व योजनाओं को ध्यान में रखते हुए एस्टीमेट तैयार करें, ऐसा नहीं होना चाहिए कि ये दोनों परियोजनाएं पूरी होने के कुछ समय बाद ही कार्यों के चलते सड़क को उखाड़ दिया जाए। विधायक ने कहा कि मुख्यमंत्री नरेश सिंह सैनी ने दादरी शहर में स्मार्ट बाजार और स्मार्ट रोड बनाने की घोषणा की थी।

ये रहे मौजूद

बैठक में दौरान माजपा जिलाध्यक्ष सुनील इंजीनियर, नगर व्यापार मंडल संरक्षक रविंद्र गुप्ता, नगर व्यापार मंडल प्रधान सुरेश पांडवनिगा, उपप्रधान मनफूल रावलधिया सहित नगर पार्श्व शामिल रहे।



कक्षा 12वीं जीवन का महत्वपूर्ण मोड़: प्राचार्य

भिवानी। एसएल इंटरनेशनल स्कूल जुद्धकर्मा में कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों के लिए भावनात्मक विदाई समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों के शैक्षणिक सफर को सम्मानपूर्वक विदा देना एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के निदेशक डॉ. सीपी मलिक, व प्राचार्य प्रतीक ने मां सरस्वती की समक्ष झीप प्रज्जलन करके किया। इसके पश्चात डॉ. सीपी मलिक ने विद्यार्थियों को ईशानदास, अनुशासन और परिश्रम को जीवन का मूल मंत्र बनाने की सलाह दी। इसके पश्चात कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों द्वारा स्वागत गीत, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां एवं प्रेरणादायक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिन्होंने सबका मन मोह लिया। प्राचार्य प्रतीक ने कहा कि कक्षा 12वीं जीवन का महत्वपूर्ण मोड़ है, जहां से नए सपनों और नई जिम्मेदारियों की शुरुआत होती है। इस अवसर पर शिक्षकों ने विद्यार्थियों के साथ बिताए अनुभव साझा किए एवं उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। विदाई समारोह के दौरान विद्यार्थियों को स्मृति-चिह्न भी भेंट किए गए। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. त्रिलोकचंद ने की

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

राजीव गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय में शनिवार को जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्घाटन पूर्व प्राचार्य डॉ. सुधीर कुमार शर्मा ने किया। प्रदर्शनी महाविद्यालय परिसर में शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक वातावरण के बीच सफलतापूर्वक संपन्न हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ.

राजीव गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय में जिला स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन विज्ञान प्रदर्शनी में राजकीय महाविद्यालय ने मारी बाजी



भिवानी। जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का अवलोकन करते अतिथि। फोटो : हरिभूमि

राजकीय महाविद्यालय भिवानी द्वितीय रहा

भौतिक विज्ञान में एमएनएस राजकीय महाविद्यालय भिवानी ने प्रथम पुरस्कार तथा राजकीय महाविद्यालय भिवानी ने द्वितीय पुरस्कार मिला। रसायन विज्ञान में एमएनएस राजकीय महाविद्यालय भिवानी ने प्रथम पुरस्कार एवं राजकीय महिला महाविद्यालय तोशाम को द्वितीय पुरस्कार मिला। कंप्यूटर विज्ञान में प्रथम पुरस्कार राजकीय महिला महाविद्यालय भिवानी ने प्राप्त किया। वनस्पति विज्ञान में प्रथम पुरस्कार एमएनएस राजकीय महाविद्यालय भिवानी को प्रदान किया। मनोविज्ञान में प्रथम पुरस्कार राजकीय महिला महाविद्यालय तोशाम तथा द्वितीय पुरस्कार एमएनएस राजकीय महाविद्यालय भिवानी को मिला। वहीं भूगोल विषय में प्रथम पुरस्कार राजकीय महिला महाविद्यालय तोशाम एवं द्वितीय पुरस्कार राजकीय महाविद्यालय लोहारू के विद्यार्थियों ने पाया।

त्रिलोकचंद ने की। उन्होंने कहा कि विज्ञान प्रदर्शनी छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नवाचार एवं तार्किक सोच को विकसित करने का एक सशक्त माध्यम है। उन्होंने छात्राओं को प्रयोगात्मक ज्ञान के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र की समस्याओं के समाधान के लिए

आगे आने का आह्वान किया। विज्ञान प्रदर्शनी के संयोजक डॉ. नवनीत सिंह रहे, जबकि आयोजन सचिव के रूप में डॉ. परमानंद एवं

दुनिया की भीड़ में क्यों बढ़ रहा है अकेलापन



देश-दुनिया की आबादी मले ही दिनों-दिन बढ़ रही हो, लेकिन इसके उलट लोगों का अकेलापन भी बढ़ रहा है। अकेलेपन की समस्या विश्वव्यापी है। भारत समेत अनेक देशों के लोग इस समस्या का सामना कर रहे हैं। अकेलेपन का हमारे स्वास्थ्य ही नहीं पूरे जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि इसके कारणों को जाना जाए और इसे दूर करने का हर संभव प्रयास किया जाए।



76,000 लोगों की उनके घर में अकेले रहते हुए मौत हुई। 4,000 लोग ऐसे थे, जिनके मरने के करीब एक महीने के बाद बाहर के लोगों को उनकी डेड बॉडीज मिलीं। जापान में तो अकेलेपन को दूर करने के लिए ज्यादा उम्र के लोग कई बार जान-बूझकर अपराध करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं, जिससे उन्हें सजा मिले और सजा के बाद वे जेल में दूसरे लोगों से मिलकर कुछ बातचीत कर सकें, उनका अकेलापन दूर हो, उनका मन लग सके।

बढ़ रहे हैं एकल परिवार

भारत में भी अकेलापन तेजी से फैल रहा है। इसकी मुख्य वजह है भारतीय समाज में टूटते संयुक्त परिवार। पहले के दौर में हमारे घर-परिवार में साथ रहने वाले अपने माता-पिता, दादा-दादी,

बाजार जाते तो किराने की दुकान या सब्जी की दुकान पर दुकानदार से बातचीत कर लिया करते थे। अड़ोसी-पड़ोसी से उनका हाल-चाल पूछ लिया करते थे। चाय की दुकानों पर जाने-अंजाने लोग भी खूब बातियाते थे। लेकिन अब ऑनलाइन शॉपिंग के बढ़ते ट्रेंड से लोगों का बाजार आना-जाना भी बहुत कम हो गया है। सब इतने व्यस्त हो गए हैं कि किसी के पास समय ही नहीं रह गया है, एक-दूसरे की खबर लेने का।

बच्चे-युवा भी हो रहे प्रभावित

2021 के ग्लोबल सर्वे के मुताबिक, अकेलेपन से प्रभावित होने वाला तीसरा सबसे बड़ा देश भारत है। इस रिपोर्ट के अनुसार, भारत के शहरों में 43% लोग अकेलापन महसूस करते हैं। चिंताजनक बात यह है कि 13 से 15 साल की उम्र के 25% बच्चे भी अकेलापन अनुभव कर रहे हैं। सोशल मीडिया की वजह से भी अकेलापन तेजी से बढ़ रहा है। कई स्टडीज में सामने आया है कि सोशल मीडिया की लत, युवाओं में अलगाव, अकेलापन और डिप्रेशन को बढ़ा रही है।

मशीनी हो रही भावनाएं

अकेलापन इसलिए भी बढ़ रहा है कि लोग एक-दूसरे के साथ अपनी भावनाएं साझा नहीं करते हैं। सोशल मीडिया में कोई इमोजी भेजकर खुद को दायित्वमुक्त समझ लेते हैं। आजकल लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किसी की आंखों में आंख डालने की जरूरत नहीं है। किसी का हाथ थामने की जरूरत नहीं है। लोगों को लगता है कि भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इमोजीज भेजना ही पर्याप्त है। यानी जब हम दुखी महसूस करते हैं तो हमारे साथ किसी की वास्तविक भावनाओं के स्थान पर देरों-देरों इमोजीज होते हैं।

अकेलापन दूर करने का करें प्रयास

हमें बचपन से ही सिर्फ यह सिखाया जाता है कि सफलता ही खुशी का सबसे बड़ा पैमाना है और जीवन में हर कीमत पर सफल होना सबसे जरूरी है। जो सफल है, वह खुश भी रह लेगा। हमें रिश्तों की अहमियत नहीं सिखाई जाती। सफलता और अधिक से अधिक पैसा, सुख-सुविधाएं अर्जित करने की अंधी दौड़ में ज्यादातर लोग अपने रिश्तों को पीछे छोड़ देते हैं। जाहिर है, इससे जीवन में अकेलापन आया ही। अकेलापन किसी सफलता से या दौलत कमाने से या शानदार करियर से नहीं, अपनों के साथ होने से दूर होता है। इसलिए अगर आप भी अकेलापन महसूस करते हैं तो सोशल मीडिया पर ही नहीं अपने दोस्तों, रिश्तेदारों से मिलने उनके घर जाइए, उन्हें अपने घर बुलाइए। परिवार के साथ समय बिताइए। अंजान लोगों से भी बात करने में न हिचकिचाइए। यही नहीं अगर आपके परिवार में या आस-पास कोई ऐसा व्यक्ति है, जो अकेलापन महसूस कर रहा है तो उससे बात कीजिए। उसके अकेलेपन को दूर करने का प्रयास कीजिए। जरूरत पड़ने पर काउंसलर की मदद भी ले सकते हैं। ऐसा करने से उस व्यक्ति का अकेलापन तो दूर होगा ही, आपको भी आत्मीय खुशी, संतुष्टि मिलेगी। *

कवर स्टोरी

एस. माग्यम शर्मा

यह सही है कि दुनिया में आठ अरब से अधिक और हमारे अपने देश में 140 करोड़ से अधिक लोग रहते हैं। लेकिन दुख की घड़ी में शायद ही एक कंधा ऐसा मिले, जिस पर सिर रखकर हम रो सकें। सोशल मीडिया पर भले ही हमारे हजारों दोस्त होंगे, फॉलोअर्स होंगे, लेकिन असल जिंदगी में एक भी हमारे साथ नहीं होता। यानी आज लोगों की भीड़ में भी हर कोई खुद को अकेला महसूस कर रहा है।

स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

अगर कोई शारीरिक बीमारी हो तो इसका असर दूसरों को नजर आता है। अकेलेपन का दुष्प्रभाव धूम्रपान और मोटापे की तरह शरीर पर नजर नहीं आता है। दरअसल, अकेलापन हमारे मन को बीमार बना देता है। अकेलापन एक दिन में 15 सिगरेट पीने से भी ज्यादा खतरनाक असर हमारे स्वास्थ्य पर डालता है। अकेलापन समय से पहले मृत्यु के खतरे को 25% तक बढ़ा देता है। अकेलेपन से ब्रेन स्ट्रोक और हृदय रोग का खतरा 30% तक बढ़ता है। यह डिमेंशिया के खतरे को 50% तक बढ़ा देता है, इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि समय रहते अकेलेपन की इस बीमारी को पहचान लें और यह जानें कि कहीं आप भी अकेलेपन के अंधेरे में खोते तो नहीं जा रहे हैं।

दुनिया भर में लोग हैं परेशान

वर्ष 2023 में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अकेलेपन को एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट घोषित किया था। अकेलेपन को परिभाषित करते हुए डब्ल्यूएचओ ने कहा था कि अकेलापन व्यक्ति की अपनी भावनात्मक पीड़ा है, जो सामाजिक अलगाव और सार्थक रिश्तों की कमी से पैदा होती है। आज के दौर में अकेलापन दुनिया भर में एक गंभीर बीमारी का रूप ले चुका है। जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में कई लोग इस कदर अकेले हो चुके हैं कि अगर उनकी मृत्यु भी हो जाए तो कई-कई दिनों तक बाहरी दुनिया को उनकी मौत के बारे में पता ही नहीं चलता।

वहां से आई खबरों के अनुसार पिछले साल जापान में करीब



नाना-नानी के साथ हम अपना सुख-दुख शेयर कर लिया करते थे। लेकिन अब वह नहीं रहा। अब संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है, जहां परिवार में पति-पत्नी ही रहते हैं। कई कपल तो बच्चे तक पैदा नहीं करना चाहते। बच्चे इसलिए नहीं पैदा करना चाहते, क्योंकि वे जानते हैं कि अगर बच्चे हुए तो उनकी देखभाल करने वाला परिवार में कोई नहीं है। महानगरों में 'इयूल इनकम-नो किड्स' का चलन बढ़ रहा है।

बढ़ती सामाजिक दूरी भी है वजह

पिछली सदी तक हम सब अनजान लोगों से भी बातचीत कर लिया करते थे। कोई रास्ता पूछता था तो बड़े मन से उसे रास्ता बताते, कई बार तो उन्हें उनके गंतव्य तक छोड़ कर आ जाते थे।

कई देशों में हो रही नई पहल

अकेलेपन की समस्या से निपटने के लिए अलग-अलग देशों में अब कई तरह की पहल की जा रही है। जैसे दक्षिण कोरिया में बुजुर्गों के लिए हेल्पी केम्प चलाई जा रही हैं। यह एक कैम्प है, जिसमें बुजुर्गों को अंजान लोगों के साथ बैकटर धूमने जा सकते हैं। उनसे बातचीत कर सकते हैं, अपने सुख-दुख साझा कर सकते हैं। इससे उन्हें अपना अकेलापन दूर करने में मदद मिलती है। इसी तरह अकेलेपन की समस्या के समाधान को तलाशने के लिए ब्रिटेन ने वर्ष 2018 में ही लॉगलीनेस मिनिस्टर की नियुक्ति शुरू कर दी थी। एक अलग मंत्रालय, एक अलग मंत्री, जो सिर्फ यह देखेगा कि देश में लोगों के अकेलेपन को कैसे दूर किया जा सकता है? वहां अकेलेपन से जूझ रहे लोगों को काउंसिलिंग और मेडिकल सपोर्ट उपलब्ध कराए जाते हैं।

लंग्घ अंशुमान खरे

गणित में बचपन से ही हम बगैर होशियार होकर भी होशियार थे। न मालूम गणित के मास्साब कहाँ-कहाँ से सवाल लाते थे, लेकिन पिटते-पिटते किसी तरह गणित में पास कर दिए जाते थे। घर वालों की तमना डॉक्टर, इंजीनियर बनाने की थी। कक्षा में हमेशा अपराधी की तरह बैठे रहते थे। गणित के गुरु जी हमेशा हमें अंतरराष्ट्रीय गणितज्ञ बनाने का मजाक करते रहते थे। पर हमें कुछ भी समझ नहीं आता। हमारे गणित के गुरु जी फिरकी लेते थे कि मुझे भगवान भी नहीं समझा सकते। गणित की क्लास हमारे लिए आफत से कम नहीं थी। मास्साब के सवाल भी माशाअल्लाह अद्भुत होते थे। एक औरत एक काम को चार घंटे में पूरा कर लेती है तो बताओ उसी काम को आठ औरतें कितने समय में पूरा करेंगी? मैं कहता, 'आठ औरतें काम तो पूरा कर नहीं पाएंगी। हां, रायता जरूर फैला देगी।'

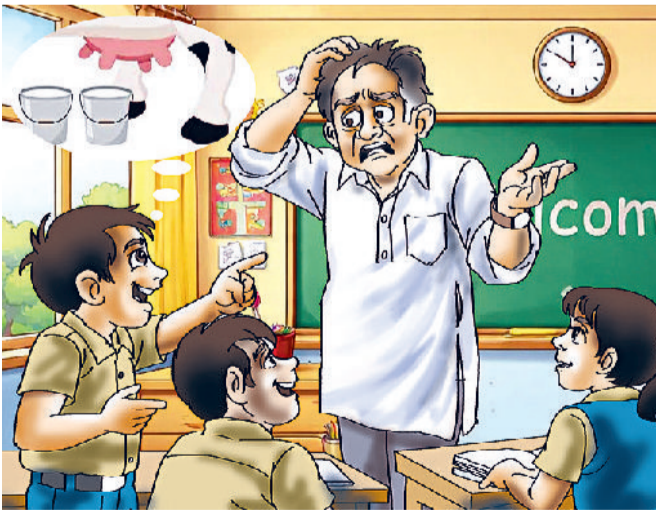
सवाल से सवाल निकालने की कला में हमारे मास्साब का कोई सानी नहीं था। कपड़े पर अटक गए तो उसी से जुड़े सवाल पर सवाल पछने लगते, 'बताओ बच्चों, अगर एक साड़ी घूंप में एक घंटे में सूखती है तो चार साड़ियां सूखने में कितना समय लेंगी?'

बहुत सरल सवाल सोचकर मैं हाथ उठाकर बोल पड़ा, 'वैरी सिंपल, चार घंटे।' मास्साब जवाब सुनकर आपसे बाहर हो गए। मैं समझ नहीं पा रहा था, मास्साब को सीधा-सा गुणा करना नहीं आता क्या?

मैंने हिम्मत करके एक सवाल पूछ लिया, 'गुरु जी, अगर एक गांव में एक गांव है और वह दो लीटर दूध देती है तो बताइए गांव वाले चालीस-चालीस लीटर दूध बाहर कैसे सप्लाई करते हैं?' मास्साब का माथा ठनका और तमतमा कर क्लास से बाहर चले गए। मेरा सवाल

गणित के मास्साब को पहली बार किसी सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाए कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है।

प्रतिभा सम्मान



अनुत्तरित रह गया। मेरे सवाल पर क्लास में चर्चा होने लगी। सब हैरान। प्रश्न तो उचित है। मास्साब नाराज क्यों हो गए? गणित के मास्साब का वैसा भी स्कूल में काफी जलवा था। प्रधानाचार्य से लेकर सभी अध्यापक और छात्र उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। दूध की सप्लाई का सवाल गणित के मास्साब के गले की फांस बन गया। कुछ दोस्तों ने कहा, 'पानी मिला लेते होंगे।' पर इतना पानी मिलाकर दूध रह ही नहीं पाएगा। सब पानी-पानी हो जाएगा। मास्साब इस बात को पता लगाने में जी-जान से जुट गए कि इस प्रश्न को किसके इशारे पर उनसे पूछा गया है। यह किस अध्यापक की साजिश है, पता लगाना जरूरी है। गणित के मास्साब को पहली बार किसी

सवाल पर नर्वस होते देखा। इसलिए मैं बार-बार उनसे इस प्रश्न को पूछता रहा। मास्साब को भी समझ नहीं आ रहा था कि कौन-सा फार्मूला लगाए कि दो लीटर दूध बराबर चालीस लीटर दूध हो जाए। कुछ तो गड़बड़ है। इस तरह के सवाल किसी किताब में नहीं होते हैं। मास्साब मेरे प्रश्न में उलझते जा रहे थे। मैं उनकी तरफ आशापरी दृष्टि से टकटकी लगाकर धैर्य से देखता रहता था। मेरे प्रश्न को दूर-दूर तक पहुंचाया गया। कहीं से समस्या का समाधान निकले। प्रधानाचार्य जी ने ऐसा गांव पहचाना, जहां के लोग दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध बनाने में सफल हुए हैं। उन्होंने गांव के लोगों को सम्मानित करने की योजना बनाई। गांव के प्रधान गांव को सम्मानित करने के नाम से उत्साहित दिखे। ऐसे प्रतिभाशाली लोगों की ओर सबका ध्यान खींचने के लिए मुझे भी मालाओं से लाद दिया गया।

क्षेत्र के विधायक, सांसद, सभी ने गांव को सम्मानित करने में रुचि दिखाई। श्वेत क्रांति के लिए पूरे गांव के लोगों को बधाई देने वालों का तांता लग गया। शासन, प्रशासन ने भी गांव को सम्मानित करने के सुर में सुर मिला दिया। जिलाधिकारी से लेकर सारे कर्मचारी मुस्लेदी से सम्मान समारोह की तैयारी में जुट गए हैं। लेकिन मैं और गणित के मास्साब प्रश्न अनुत्तरित रहने से चिंतित हैं। हम दोनों शून्य में उत्तर खोजने की कोशिश कर रहे हैं। दुग्ध क्रांति की गुत्थी उलझती जा रही है। सुना है कि गांव के सम्मान समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री भी आएंगे और ऐसी प्रतिभाओं को सम्मानित करेंगे, जो दो लीटर दूध से चालीस लीटर दूध सप्लाई करने का 'हुनर' जानते हैं। *

अस्पताल जाते समय सड़क की भीड़ और अब वहां सैकड़ों की संख्या में कतारबद्ध खड़े लोगों को देखकर बाबूजी बोले, 'महानगरों के सड़कों पर दौड़ती-हांफते वाहनों के साथ, यहां का आम जीवन थरथरते हुए गुजरता है।' 'राजधानी में अच्छी सुविधा मिलेगी, यह सोचकर सभी राज्यों से लोग आकर यहां बसना चाहते हैं और बसते भी हैं, इसलिए भीड़ तो होगी ही।' बाबूजी की ओर देखकर मयंक धीरे से बोला। बाबूजी बड़ी मुश्किल से इलाज के लिए अपना घर और गांव छोड़कर अपने बेटे मयंक के पास इस महानगर में आए थे। कहीं बाबूजी गांव वापस जाने की जिद न करने लग जाएं, यह खयाल आते ही मयंक बोला, 'बाबूजी एक बार आपका अच्छी तरह से इलाज हो जाए बस और हमें क्या चाहिए!' 'अरे बेटा! मुझे लगता है यहां तो हम और भी बीमार हो जाएंगे। स्वस्थ क्या खाक होंगे?' कहकर वे तेज-तेज खानसे लगे। उनकी आंखें भी लाल हो गईं। मयंक ने घबराकर इधर-उधर देखा। अस्पताल का प्रतीक्षालय पूरी तरह से भरा हुआ था। एक भी सीट खाली नहीं थी, जहां बाबूजी को वह बैठा सके। एक व्यक्ति जो उसी की तरह दिख रहा था। मयंक ने उसे आग्रहपूर्ण नजरों से देखा। उस व्यक्ति ने खड़े होकर बाबूजी को बिटाने का इशारा किया। मयंक ने बाबूजी को बिटाना और दोनों हाथ जोड़कर उस व्यक्ति का आभार व्यक्त किया और बाबूजी से

लघुकथा / मिशा भास्कर

छांव से दूर



और इसकी सुविधाएं बड़े लोगों के लिए होती हैं। हम इनके फोटो देखकर अपने से झूठ बोलते हैं कि मैं भी इसका हिस्सा हूँ। पर हमारी इतनी औकात नहीं है।' मयंक की आंखें गीली हो गईं। वह बोला, 'सच कह रहे हैं बाबूजी! बीस साल की नौकरी में क्या ही कर लिया मैंने? आज तक बीवी बच्चों को इस शहर में एक छत भी न दे सका।' बेटे को इस तरह उदास देखकर बाबूजी उसके लिए पर धर रखकर बोले, 'बेटा हम अपने गांव चलेंगे। वहीं के अंग्रेजी स्कूल में मेरी पोती पढ़ेगी और मैं अपने बड़े से आंगन में नीम की छांव तले बैठकर उसके साथ खेल्ना और' तभी नर्स ने टोकन नंबर बहतर रामजस को आवाज दी। मयंक बाबूजी का हाथ थाम कर बोला, 'चलिए बाबूजी, अपना नंबर आ गया।' *

तमन्ना खानम

तो कहीं गणिकाओं के जीवन की त्रासदी भोगती मरजीना की कराह सुनाई पड़ती है (मरजीना)। 'तमना खानम' कहानी में उच्च वर्ग की महिला तमना को अपनी जिंदगी की पेचीदगियों को अपने अंदाज में सुलझाते देखा जा सकता है। बहुत अलग मिजाज की ये कहानियां, कहीं-कहीं उर्दू के मशहूर कथाकार मंटे की याद दिलाती हैं। इन कहानियों में भाषा की रवानगी भी देखने लायक है। *

जिंदगी को खुशमिजाज बनाना हमारे ही हाथों में होता है। अगर हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में कुछ बदलाव कर लें, कुछ आदतों को शामिल कर लें तो हमारी जिंदगी खुशमिजाज बन सकती है। ऐसा किस तरह हो सकता है, जानिए।

जीने के अंदाज में करें बदलाव खुशमिजाज हो जाएगी जिंदगी

लाइफस्टाइल

शिखर चंद जैन

हमारा दिमाग ही हमारी सोच और नजरिए का स्रोत होता है। जब दिमाग अशांत या उद्वेलित रहता है तो हमें हर चीज में उथल-पुथल, नकारात्मकता और बुराई नजर आती है। लेकिन जब दिमाग शांत रहता है, हम खुशमिजाज रहते हैं तो हमें हर चीज सकारात्मक अच्छी और सही लगती है। खुशमिजाजी और सुकून के लिए कुछ बातें और आदतें अपनानी जरूरी हैं।

लोगों से बनाए अच्छे संबंध

भले ही सबको खुश रखना दुनिया का सबसे कठिन काम है लेकिन सबके साथ खुश रहना दुनिया का सबसे आसान काम है। हार्वर्ड स्टडी ऑफ एडल्ट डेवलपमेंट के डायरेक्टर और मनोचिकित्सक रॉबर्ट वाल्डिंगर का कहना है कि लोगों के साथ मजबूत और मधुर संबंध खुशी की प्रमुख वजह बन सकते हैं। ये लोग रोमांटिक पार्टनर, आपके दोस्त, बच्चे, सहकर्मी, पड़ोसी, रिश्तेदार या भाई-बहन कोई भी हो सकते हैं। भले ही हम सब स्वतंत्रता को खास मानते हैं, लेकिन यह ना भूलें कि हम सब एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं। जब हम अपने इर्द-गिर्द मौजूद लोगों के साथ अच्छे संबंध रखते हैं तो मानसिक खुशी तो मिलती ही है, एक बड़ा सपोर्ट सिस्टम भी मिलता है, जो हमें हर तरह से सुकून देता है।

अजनबियों से करें बातचीत

ओटावा (कनाडा) की काल्टन यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञानी जॉन जेलेक्सकी कहते हैं कि आपको एक्सप्लोर्ट होना चाहिए। अंतर्मुखी, गंभीर और चुप्पी साध कर रहने वाले लोग उदास रहते हैं, जबकि सबसे आसानी से घुल-मिल जाने वाले और अजनबी लोगों से बातचीत करने की कला जानने वाले अकसर खुशमिजाज रहते हैं। साथ ही ऐसे लोग आसानी से अपना सोशल सर्किल और बिजनेस सर्किल भी बढ़ा लेते हैं, जिससे इन्हें सफलता मिलती है। जाहिर है, सफलता भी

इन पर भी करें अमल

जीवन के हर आयाम को बराबर समय देने की कोशिश करें, जैसे परिवार, व्यापार, मित्र, जीवनसाथी, समाज आदि क्षेत्रों में सक्रिय रहें। हसी-मजाक करें, लेकिन दूसरों का मजाक ना उड़ाएं। कई बार हसने स्थिति बिगड़ जाती है और तनाव का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा आप अनुभवों पर पैसा और समय खर्च करें। उन कार्यों को करें, जो आपने कभी नहीं किया और देखा। जैसे हॉर्स राइडिंग करना, गुडवुड देखना, अंडरवाटर स्पॉट देखना या इस्त्रम शामिल होना, थ्रिप्टर में जाकर नाटक देखना, किसी बर्फाले स्थान की यात्रा करना आदि।

खुशी मिलने की एक महत्वपूर्ण वजह है। पालतू के साथ समय बिताएं

वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए एक ताजा अध्ययन में पाया गया कि पालतू जानवर के साथ बिताया गया 10 मिनट का समय भी दिमाग को सुकून देने वाला होता है। इससे कार्टिसोल नामक स्ट्रेस हार्मोन का स्तर गिरता है। अमेरिकी नागरिकों द्वारा किए गए एक शोध में पाया गया कि सबसे ज्यादा सुकून देने वाले पालतू कुत्ते होते हैं।

कुदरत को निहारें

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोधकर्ताओं ने 90 स्टूडेंट्स पर किए गए शोध में पाया कि कुदरत को निहारना मन को सुकून देने वाला एहसास होता है। जब हम पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को निहारते हैं तो हमारा ध्यान परेशानियों से हटकर पूरी तरह उन्हीं पर लग जाता है। इससे दिमाग को सुकून मिलता है।

फल-सब्जी ज्यादा खाएं

सोशल साइंस एंड मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित ताजातरीन स्टडी रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रचुर मात्रा में फल और सब्जी खाने से खुशमिजाजी और सुकून मिलता है। इसलिए रोज कच्ची सब्जियों का सलाद और फल खाएं। सबसे बड़ी बात यह है कि अगर आप खान-पान, आराम और सोने का समय नियंत्रित कर लेते हैं तो आपका हैप्पीनेस लेवल बढ़ जाता है। न्यूट्रिशन, एक्सरसाइज और रेस्ट, खुशी के मूल मंत्र हैं।

वाटर बॉडीज के पास जाएं

जर्नल आफ एनवॉयनमेंटल साइकोलॉजी में प्रकाशित एक अध्ययन में पाया गया कि पानी के संलग्न स्थल नजदीक रहने से लोगों में पॉजिटिव इमोशंस का संचार होता है। स्विमिंग पूल, समुद्र या नदी के किनारे खड़े होकर पानी की हलचल को निहारना सुकून देता है। इससे स्ट्रेस लेवल भी कम होता है। *



पुस्तक चर्चा / विज्ञान मूषण

अलग मिजाज की कहानियां

रिश्त कथाकार हबीब कैफी की चुनी हुई सत्रह कहानियां 'तमना खानम' पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। करीब साढ़े पांच दशक के कालखंड में लिखी गई ये कहानियां, हमें समाज के अलग-अलग तबके से ताल्लुक रखने वाली स्त्रियों की जिंदगी से रूबरू कराती हैं। कहीं पुरुषत्व के दंभ से दमित लेकिन फिर भी उसके साथ रहने की विवश बंधी नजर आती है (औरत),

तमना खानम

पुस्तक: तमना खानम (कहानी संग्रह), लेखक: हबीब कैफी, मूल्य: 299 रुपये, प्रकाशक: कोटिल्य बुक्स, नई दिल्ली



जरा सोचिए, प्रकृति और जीवन में रंग और सुगंध न हों तो यह दुनिया कितनी नीरस हो जाएगी। ये फूल ही तो हैं, जो हमारी दुनिया को रंगीन बनाते हैं, खुशबू से महकाते हैं। वासंती मौसम में तो बाग-बगीचों में फूलों की बहार ही आ जाती है। ऐसे में आइए, बात करें फूलों की...

वासंती मौसम में बात फूलों की



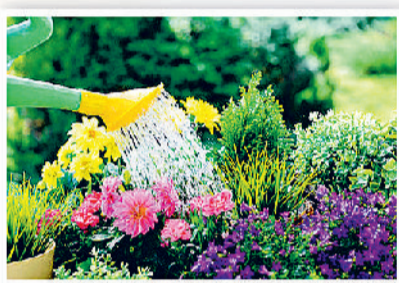
प्रकृति
शिखर चंद जैन

ह र ऋतु में प्रकृति हमारे लिए कई बेशकीमती सौगातें लेकर आती है। प्रकृति की इन सौगातों में कुछ बेहद खूबसूरत फूल भी शामिल हैं। फूलों की यह मनमोहक दुनिया, हमें एहसास कराती है कि जीवन में रंग और खुशबू का कितना महत्व है। हर फूल अपनी जगह खास है, चाहे वह सड़क किनारे खिला छोटा-सा अनाम फूल हो या किसी बगीचे में खिला राजसी गुलाब। अगली बार जब आप किसी फूल को देखें, तो रुककर उसकी मोहक बनावट, उसकी सुगंध के बारे में जरूर सोचें। इन्हें जितना गौर से, प्यार से देखेंगे आपको इनसे उतना ही ज्यादा लगाव हो जाएगा।

संभालें नाजूक फूलों को: फूल हमारी धरती को खूबसूरती तो प्रदान करते ही हैं। इसके अलावा कई कोट-पतंगों को अपना रस, कई औषधीय लाभ और हमें खुशी का अहसास भी कराते हैं। ये मधुमक्खियों और तितलियों को आकर्षित करते हैं, जिससे परागण होता है। इससे पौधे बीज बना पाते हैं और नए पौधे उगते हैं। इस तरह फूल हमारे पर्यावरण का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम उनकी

रक्षा करें। ज्यादा कुछ नहीं तो इतना तो कर ही सकते हैं कि हम बिना कारण फूलों को न तोड़ें। जब हम फूल तोड़ते हैं, तो वह पर्याप्त मात्रा में बीज नहीं बना पाते और नए पौधे नहीं उग पाते हैं। फूलों की हिफाजत की शुरुआत अपने घर से करें। घर के गमलों में लगे फूलों वाले पौधों को नियमित तौर पर पानी दें और उन्हें कुछ समय के लिए सूरज की रोशनी में भी रखें। तितलियों, मधुमक्खियों और धीरों को फूलों पर बैठकर उनका रस चूसने दें। उन्हें भगाने का प्रयास न करें। न भूलें कि इससे उन कीटों को भोजन तो मिलता ही है, उस फूल वाले पौधे का परागण भी होता है। प्रकृति का सम्मान करें और अधिक से अधिक फूलों के पौधे लगाएं ताकि हमारे आस-पास हमेशा फूल महकते रहें।

बात भी करते हैं फूल: फूलों की मूल



रसायन छोड़कर भी वे संवाद करते हैं। जब किसी पौधे पर हानिकारक कीट हमला करते हैं तो वह हवा में कुछ रसायन छोड़ते हैं, जिसे आस-पास के दूसरे पौधे महसूस कर लेते हैं और अपनी सुरक्षा के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रसिद्ध भारतीय वनस्पति विज्ञानी सर जगदीश चंद्र बोस ने बताया था

कि पौधे इलेक्ट्रिक सिग्नल्स के जरिए भी संवाद करते हैं।
हमें इसलिए भाते हैं फूल: फूल हमें इसलिए अच्छे लगते हैं, क्योंकि उनके सुंदर रंग, मनमोहक सुगंध और आकर्षक बनावट हमारे दिमाग में खुशी के हार्मोन (डोपामाइन और सेरोटोनिन) पैदा करते हैं, जिससे हमें शांति और ताजगी महसूस होती है। फूल प्रकृति की सुंदरता, जीवन की सरसता और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माने जाते हैं। इतना ही नहीं, ये देवा के रूप में भी महत्वपूर्ण होते हैं। पौराणिक काल में किसी स्थान पर फूलों की मौजूदगी इंसानों को यह संकेत देती थी कि आस-पास पानी, पोषक तत्व और भीजन (फल) उपलब्ध हैं। यही वजह है कि मानव सभ्यता के विकास से ही फूलों से हमारा खूबसूरत रंग, इनकी मुलायमियत और सिमेट्रिकल बनावट आंखों को बहुत आकर्षित करती है।
कम नहीं सांस्कृतिक-प्राकृतिक महत्व: फूलों का सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व भी है। ये खुशी, प्रेम, सम्मान और उत्सव के प्रतीक माने जाते हैं, इसलिए जन्मदिन, श्राद्धों और अन्य शुभ अवसरों पर फूलों को बुके, माला, गुच्छ के रूप में भेंट किया जाता है। वास्तु और ज्योतिष के अनुसार, फूल घर में सकारात्मक ऊर्जा लाते हैं और नकारात्मकता को दूर करते हैं, जिससे खुशहाली आती है। *

आर्थिक लाभ भी कराते हैं फूल

फूलों को पसंद किए जाने की एक वजह यह भी है कि ये लाखों लोगों को आर्थिक लाभ भी कराते हैं। कोई फूल उगा कर, कोई इन्टेंड बेव कर, कोई निर्यात करके और कोई इनसे सजावटी सामान, मालाएं और बुके आदि बनाकर धनार्जन करता है। भारत में फूलों का कारोबार तेजी से बढ़ रहा है, जिसका बाजार 2022 में लगभग 23,000 करोड़ रुपये का था और 2028 तक 46,700 करोड़ रुपये तक पहुंचने की उम्मीद है। बैंगलूर, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल प्रमुख पुष्प उत्पादक राज्य हैं। गुलाब, गेंदा, राजगीरी और ऑर्किड जैसे फूलों की मांग दुनिया भर में सबसे अधिक है। भारत के फूल संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, नॉर्वे, जापान, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया सहित कई देशों में भी भेजे जाते हैं।



निवेश, बचत और फाइनेंस से संबंधित अन्य कई पहलुओं को लेकर अक्सर लोग असमंजस या भ्रम की स्थिति में रहते हैं। एक सुरक्षित वित्तीय भविष्य के लिए जरूरी है कि आप वित्त से संबंधित इन मिथ और फैक्ट को अच्छी तरह जानें-समझें।

समृद्ध जीवन के लिए समझें फाइनेंस से जुड़े मिथ-फैक्ट

संज्ञान
अंजु जैन

ह मारे मन में पैसों को लेकर पारंपरिक तौर पर कई ऐसी धारणाएं बैठा दी गई हैं, जो भ्रम अच्छी रखने के लिए ऐसे भ्रमों और उनसे जुड़े सच के बारे में जानना जरूरी है। इससे आप सुखी और समृद्ध रहेंगे।
मिथ: अगर आपको इनकम ज्यादा है तो आप अमीर हो ही जाएंगे।
फैक्ट: अमीर होना सिर्फ इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आप कितना कमाते हैं, बल्कि इस पर भी निर्भर करता है कि आप कितना बचाते हैं और कितनी समझदारी से निवेश करते हैं। मार्गन हाउसेल अपनी किताब 'द साइकोलॉजी ऑफ़ मनी' में लिखते हैं कि असली धन वह है, जो लोगों को सामने दिखाई नहीं देता बल्कि जिसे आपने अच्छी जगह निवेश कर रखा है। जैसे जमीन-जायदाद, शेयर, सोना, चांदी, एफडी, म्यूचुअल फंड आदि।
मिथ: घर खरीदना हमेशा ही एक बेहतरीन संपत्ति मानी जाती है।
फैक्ट: नहीं, अगर घर का मॉटेन्स बहुत ज्यादा है, आपके कार्यस्थल से दूर है, डेली शॉपिंग की सुविधा नजदीक नहीं है या इसकी रीसेल वैल्यू बढ़ने वाली नहीं है तो आपके लिए यह नुकसानदायक ही होगा। रॉबर्ट क्रियासाकी अपनी पुस्तक 'रिच डेड-पुअर डेड' में बताते हैं कि अगर आपका घर आपकी जेब से विभिन्न मदों में पैसा निकाल रहा है तो वह एक लायबिलिटी है, एसेट नहीं। एसेट वह है, जो आपकी जेब में पैसा डाले।
मिथ: निवेश करने के लिए बहुत सारे पैसों की



जरूरत होती है।
फैक्ट: निवेश के लिए इसकी आदत और खर्च पर नियंत्रण जरूरी होता है। पुस्तक 'द रिचेंस मेन इन बेबीलोन' के अनुसार, अपनी कमाई का कम से कम 10 प्रतिशत हिस्सा खुद के लिए बचाकर निवेश की शुरुआत करना ही सबसे बड़ी रणनीति है। 'कंपाउंडिंग' की शक्ति कम पैसों से भी बड़ा फंड बना सकती है।
मिथ: कर्ज हमेशा नुकसानदायक ही होता है।
फैक्ट: बिल्कुल नहीं। सफल निवेशक हमेशा जोखिम कम करने पर ध्यान देते हैं। बेंजामिन ग्राहम की पुस्तक 'द इंटेलिजेंट इन्वेस्टर' सिखाती है कि अपनी पूंजी की सुरक्षा का ख्याल रखना



तरीका है। शेयर बाजार में 'कब' निवेश करना है, इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है कि आप 'कितने समय' तक निवेशित रहते हैं, क्योंकि निरंतरता ही वैश्व क्रिएशन की असली कुंजी है। बाजार में अधिक समय बिताने से लंबी अवधि में चक्रवृद्धि व्याज और धैर्य के कारण बेहतर रिटर्न मिलता है, जो पोर्टफोलियो को बढ़ने का मौका देता है।
(वित्तीय सलाहकार प्रदीप अग्रवाल और चार्टर्ड अकाउंटेंट शुभम तोदी से बातचीत पर आधारित)

बॉलीवुड टैंड
डी. जे. नंदन

क ई फिल्मी गीत ऐसे होते हैं, जो सीधे दिल में उतरते हैं। बीते दौर के सदाबहार गीतों पर यह बात पूरी तरह लागू होती है। ये गाने सुनने के दौरान ही नहीं बल्कि उसके बाद भी देर तक दिलो-दिमाग में गूंजते रहते हैं। अब ऐसे गीत कम ही बनते हैं। आज ऐसे गीत कम इसलिए नहीं हैं कि प्रतिभा खत्म हो गई है, बल्कि इसलिए कि दिल तक पहुंचने का रास्ता बदल गया है और यह छोटा भी कर दिया गया है। अगर हम आज के बॉलीवुड गीत-संगीत को ध्यान से सुनें, तो साफ पता चलता है कि मंद्र सप्तक यानी नीचे सुर में गाए गए, ठहरे हुए, भावप्रधान और गहराई वाले गीत अब अपवाद बनते जा रहे हैं।
सदाबहार गीतों का दौर: बीते दौर के गीतों को सुनते हुए एक सुकून, एक ठहराव-सा महसूस होता है। मसलन, फिल्म 'वो कौन थी' के इस गीत पर गौर करें, 'लग जा गले...' (स्वर-लता मंगेशकर, संगीत-मदन मोहन) यह गीत सुकून की पराकाष्ठा पर पहुंचता है। आवाज में न कोई जल्दबाजी है, न दिखावा। बस एक अंतिम आग्रह, जो सर्गोशी में भी अमर हो गया। इसी



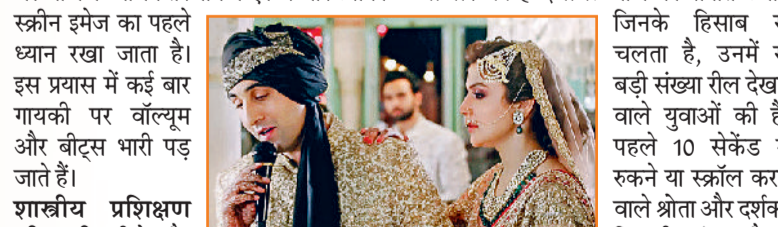
'अमर प्रेम' का गीत 'चिगारी कोई भड़के' तरह फिल्म 'अमर प्रेम' का 'चिगारी कोई भड़के...' (स्वर-किशोर कुमार, संगीत-आर. डी. बर्मन), किशोर कुमार का यह गीत यह साबित करता है कि मध्यम और नीचा सुर कमजोरी नहीं, गीत की ताकत भी होती है। 'अभी न जाओ छोड़कर...' (फिल्म 'हम दोनों', स्वर-मोहम्मद रफी और आशा भोसले, संगीत-जयदेव) गीत को सुनें तो इस गीत में संवाद है, आग्रह है और प्रेम का सपना उठराव है। सुर इतने संयमित हैं कि आज भी इस गीत को सुनते हुए लोग इसमें खो जाते हैं। ऐसे ही 'कहीं दूर जब दिन ढल जाए...' (फिल्म 'आनंद', स्वर-मुकेश, संगीत- सलिल चौधरी) गीत दिन और जीवन- दोनों के ढलने का संगीतात्मक रूपक है। और इसी तरह 'वो शाम कुछ अजीब थी...' (फिल्म 'स्वर-मोहम्मद रफी और आशा भोसले, संगीत- हेमंत कुमार) गीत में सुर सिर्फ चलते ही नहीं, ठहरते भी हैं। यही ठहराव इस गीत की आत्मा है।
क्यों कम बन रहे ऐसे गीत: सवाल यह है कि आज के समय में बीते दौर की तरह सुकूनदायक, रूहानी और ठहराव भरे गीत क्यों नहीं बनते? खोजने पर इसके कई कारण निकलकर सामने



अब क्यों नहीं बन पाते रूहानी सुकून देते गीत

पुराने फिल्मी गीतों को आज भी सुनें, तो ऐसा लगता है मानो किसी ने कानों में मिश्री घोल दी हो। ठहराव और सुकून से भरे ये गीत सीधे रूह में उतरते हैं। आज ऐसे गीत कम ही बनते हैं। बॉलीवुड सॉन्व्स के इस बदले हुए ट्रेड पर एक नजर।

आते हैं। जैसे-आज के गीत 'सुनाई देते' के लिए बनाए जाते हैं, 'महसूस होने' के लिए नहीं। तेज बीट्स और ऊंचे सुर तुरंत ध्यान खींचते हैं, जबकि नीचे सुर धीरे और स्थायी असर करते हैं। आज की फास्ट लाइफ, मोबाइल स्पीकर, रील्स और जिम प्लेलिस्ट को ध्यान में रखकर बनाए जा रहे गीतों में वो सुकून, वो ठहराव महसूस करना मुश्किल है। आज के संकेत में म्यूजिक कंपनियां चाहती हैं पहले 10 सेकेंड में ही हिट और व्यूज मिल जाए। नीचे सुर वाला गीत धीरे खुलता है, इसलिए उसे आज के दौर में 'रिस्की' माना जाता है।
वॉल्यूम-बीट्स को महत्व: बीते दौर में गायक फिल्म के किरदार से पहले गीत के भाव खोजते थे। आज के अधिकतर गाने में एक्टर और उसकी स्क्रीन इमेज का पहले ध्यान रखा जाता है। इस प्रयास में कई बार गायकी पर वॉल्यूम और बीट्स भारी पड़ जाते हैं।
शास्त्रीय प्रशिक्षण की कमी: नीचे और मध्यम सुर में गाना आसान नहीं होता। इसके लिए रियाज, सांस पर नियंत्रण और धैर्य चाहिए होता है, जो आज के गायकों में कम होता जा रहा है।
कभी-कभी सुनाई पड़ते हैं मधुर गीत: अच्छे, मधुर गीत भले ही आज फिल्म संगीत के हाशिए पर चले गए हैं, लेकिन ये पूरी तरह खत्म नहीं हुए हैं। आज भी कुछ मधुर गीत बन रहे हैं, जो बिना शोर किए दिल में उतर जाते हैं। उदाहरण के तौर पर हम आज के दौर के कुछ बेहतरीन सीधे रूह में उतरने वाले गीतों को देख सकते हैं- फिल्म 'तमाशा' के गीत 'अगर तुम साथ हो...'



'ऐ दिल है मुश्किल' का गीत 'चन्ना मेरेया' होता है- वे तेज, ऊंचे और तुरंत पकड़ में आने वाले सुर चाहते हैं। मध्यम और नीचे सुर का गीत धीरे खुलता है, दो-तीन बार सुनने पर असर करता है, अकेलापन और ठहराव की मांग करता है। आज के संगीत प्रेमियों और इंटरस्ट्री को गायक से ज्यादा परफॉर्मर चाहिए। लाइव शो, डांस, स्क्रीन प्रेजेंट्स भी मायने रखता है। इन्हीं सब पहलुओं को ध्यान में रखकर आज के गीत-संगीत को रचा जाता है। देखा जाए, तो मामला सीधा-सीधा प्रोफेशनल प्रेशर के साथ ही 'डिमांड एंड सप्लाई' का माना जा सकता है। *

जिनके हिसाब से चलता है, उनमें से बड़ी संख्या रील देखने वाले युवाओं की है। पहले 10 सेकेंड में रुकने या स्कॉल करने वाले श्रोता और दर्शक, जिनकी पसंद पर पैसा, प्रमोशन और ट्रेड तय